।। श्री सुरभ्यै नमः ।।

मासिक

कामधेनु कल्याण पत्रिका

मार्च 2026

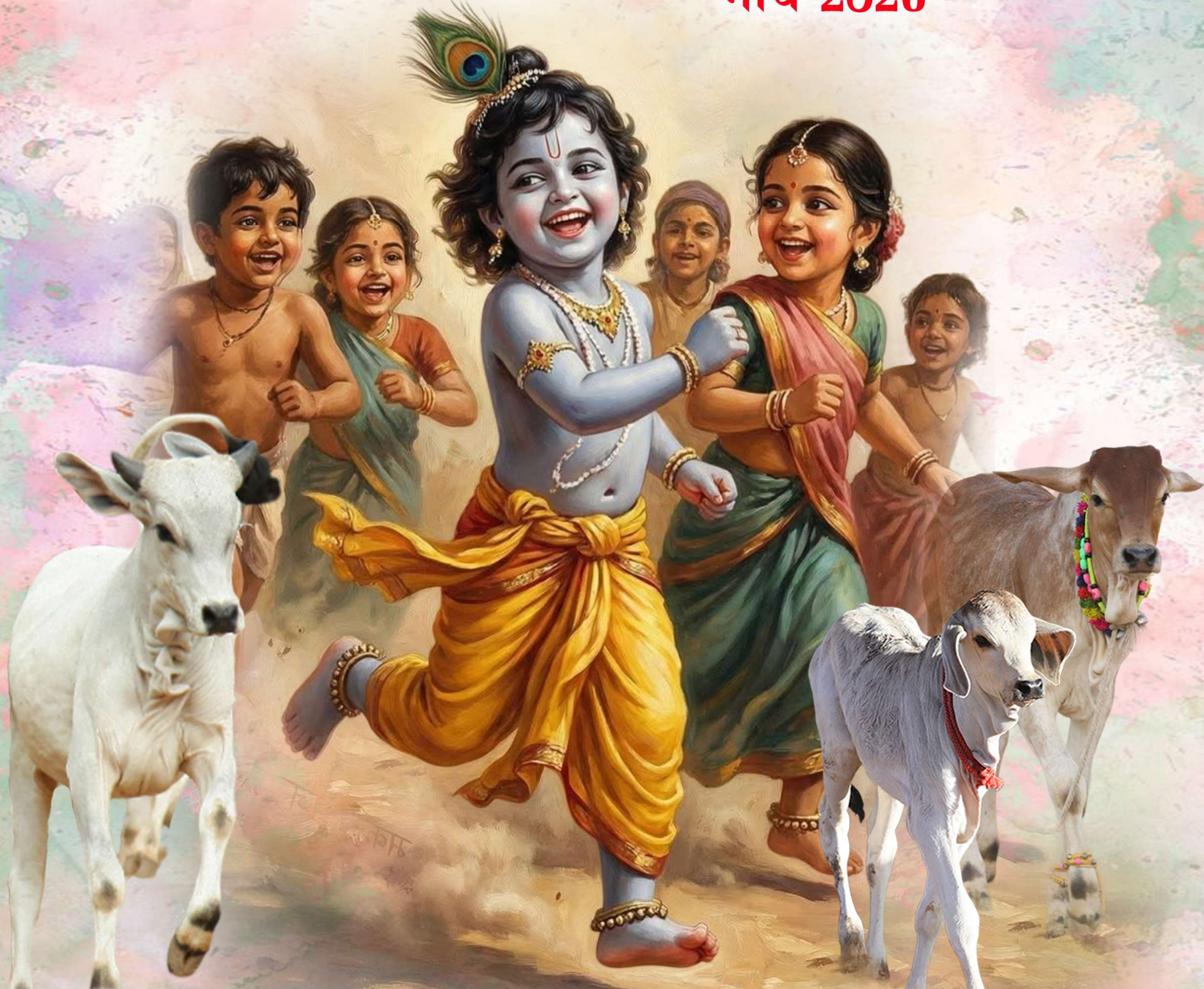

वर्ष : 02 Website:-www.godhampathmeda.org Email :- K.k.p.pathmeda@gmail.com अंक : 12

सुरभि उवास

हे भारत के निवासियों!

आप सभी को मेरा बहुत–बहुत मंगलमय शुभ अशीर्वाद!

मेरे प्यारे पुत्रों! मैं तुम्हारी वही गोमाता हूँ जिसे तुम युगों से पूजते आए हो। मैंने सदैव अपनी ममता से तुम्हें सींचा है, पर आज मेरा वंश मानवता की भूलों के कारण निराश्रित होकर दर–दर भटक रहा है। आप लोगों ने ही मेरे वंश की अनदेखी कर उसे आज उस कगार पर पहुँचाया है कि उसके अपने बछड़े का भी पेट नहीं भर रहा है, जबकि तुम्हारे पूर्वजों की गोसेवा और गोभक्ति के कारण इसी देश में दूध और घी की नदियों बहती थी। आज मुझे अपने वंश के संरक्षण और संवर्धन की आवश्यकता है। अगर तुम अपना और आने वाली तुम्हारी पीढ़ियों का कल्याण चाहते हो, तो मेरी इन बातों को अपने जीवन में उतारो।

हे मेरे प्रिय भारतवंशियों! मुझे केवल प्रतीकों में नहीं, प्रेम में ढूँढो! मेरे वंश को सड़कों पर कूड़ा और प्लास्टिक खाते देख अपनी आँखें न मूंदो। मेरे वंश का संवर्धन तब होगा जब तुम उसे कूड़े के ढेर से निकालकर चारा, दाना, औषधि और सुरक्षित आश्रय दोगे।

प्यारे पुत्रों! मेरे पंचगव्य की शक्ति को पहचानो! मेरा दूध, दही, घी, गोमूत्र और गोबर केवल पदार्थ नहीं, बल्कि स्वास्थ्य और प्रकृति का आधार हैं। रसायनों को छोड़कर जैविक खेती अपनाओ, ताकि मेरी संतानें (बैल) भी खेतों में अपनी उपयोगिता पा सकें और तुम्हारी संतानें विषमुक्त आहार पा सके।

हे मेरे भारत की ऋषि संतानों! आश्रमों में गोशालाएं बनाओ और गोशालाओं को आश्रम बनाओ। मेरे वंश को कैदियों की भांति नहीं देवताओं की तरह ससम्मान और पूज्य भाव से रखो। जहाँ मेरे वंश का संवर्धन हो, वहाँ स्वच्छता और स्नेह हो। मेरे वंश को खूंटे से बांधकर केवल दूध के लिए न पालो, बल्कि मेरे वंश के संरक्षण के लिए कार्य करो और उसकी सेवा कर गोविन्द की प्रसन्नता प्राप्त करो।

हे भारत के अर्थ शास्त्रियों! मेरे वंश को आर्थिक स्वावलंबन से जोड़ो। मेरे वंश का संवर्धन तभी स्थायी होगा जब तुम उसके पंचगव्य उत्पादों को अपने दैनिक जीवन का हिस्सा बनाओगे। गो–आधारित उत्पादों का उपयोग कर तुम न केवल मेरे वंश का, बल्कि भारत की अर्थव्यवस्था का भी संवर्धन करोगे।

हे भारतवासियों! अपनी संस्कृति को जीवंत रखो! श्रीकृष्ण ने मुझे पूजकर तुम्हें एक संदेश दिया था। उस परंपरा को जीवित रखो ताकि आने वाली पीढ़ियाँ भी जान सकें कि मैं केवल एक प्राणी नहीं, बल्कि इस धरती की पोषक हूँ। पुत्रों! जब मेरा वंश सुरक्षित रहेगा, तभी तुम्हारी धरा सुरक्षित रहेगी। मेरे वंश का संवर्धन ही तुम्हारे सुख और समृद्धि का मार्ग है।

आपकी अपनी प्यारी माँ सुरभि

।। वन्दे धेनुमातरम्।।

यया सर्वमिदं व्याप्तं जगत् स्थावरजंगमम्। तां धेनुं शिरसा वन्दे भूतभव्यस्य मातरम्।।

वर्ष:2

कामधेनु-कल्याण

अंक: 12

फाल्गुन मास शुक्लपक्ष वि.सं. 2082 रा.शाः 1947 मार्च –2026

1. **गोसेवा के लिये भगवान अवतार लेते हैं** – परम् श्रद्धेय गोऋषिजी महाराजश्री 04
2. **प्रार्थना क्या है** – परम् श्रद्धेय गोऋषिजी महाराजश्री 07
3. **श्री कामधेनु कृपा प्रसाद** – परम् श्रद्धेय गोऋषिजी महाराजश्री 10
4. **ठाकुरजी कब आओगे** – भगवत प्रेरणा से 13
5. **माँ** – परम् श्रद्धेय स्वामी श्री रामसुखदासजी महाराज 16
6. **श्रीमदभागवत कथा** – पू. द्वाराचार्य महंत स्वामी श्री राजेन्द्रदासजी महाराज 17
7. गोमहिमा सूक्त (पैप्पलाद संहिता) – संकलित 20
8. **श्री राम कथा** – पू. आचार्य श्री दयानंद शास्त्री जी महाराज 21
9. **श्री शिव महापुराण कथा** – पू. गोवत्स श्री राधाकृष्ण जी महाराज 24
10. परमपद (जीव का अपना असली घर) – साभार 'साधक संजीवनी' 27
11. **गोसंवर्धन वर्तमान की आवश्यकता** – अम्बा लाल सुथार सम्पादक 28
12. महान गो वैज्ञानिक सहदेव – संकलित 30
13. **संस्था समाचार** – फरवरी माह में हुए विभिन्न घटनाक्रमों का संक्षिप्त विवरण 32
14. प्रकाशक का घोषण पत्र प्रारूप 4 व गीत 34

गाय बिना गति नहीं

वेद बिना मति नहीं

संस्थापक एवं प्रधान संरक्षक : परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानन्द जी महाराज

Web: www.godhampathmeda.org

Email : k.k.p.pathmeda@gmail.com

सम्पादकीय पता

श्री गोधाम महातीर्थ आनन्दवन-पथमेड़ा,
त.-सांचोर, जि.-जालोर (राज.) 343041

Mob. No. 9828052638

k.k.p.pathmeda@gmail.com

सम्पादक

अम्बा लाल सुथार

10 वर्षीय सदस्यता शुल्क–2100 रुपये मात्र

मूल्य:20 रुपये

श्री कामधेनु कृपा प्रसाद

गोसेवा के लिये भगवान अवतार लेते हैं

(परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज)

(सुरभि संसद दिनांक 16.01.2026 में प्रदान किया गया आशीर्वाद)

यया सर्वमिदं व्याप्तं जगत् स्थावरजंगमम्।
तां धेनुं शिरसा वन्दे भूतभव्यस्य मातरम्।।
पंच गावः समुत्पन्ना मध्यमाने महोदधौ।
तासां मध्ये तु या नंदा तस्यै देव्यै नमो नमः।।

सर्वेश्वर सचिचदानंदघन भगवान श्री गोपाल कृष्ण अभिनव ब्रजमण्डल प्रांगण में श्री गोवर्धनाथजी के स्वरूप में विराजमान हैं और हम सबके अंतर में अंतर्यामी रूप से स्थित है उनका पावन स्मरण करते हैं, उन्हीं की आराध्या, उपास्या वेदलक्षणा गोमाता तथा उसके अखिल गोवंश की हम वंदना करते हैं।

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा लोक पुण्यार्थ न्यास के वार्षिक अधिवेशन सुरभि संसद में सभापति के आसन पर विराजमान पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्ण जी महाराज, श्री गोधाम पथमेड़ा आनन्दवन परिसर के संरक्षक, संयोजक गोसंत श्री नंदरामदास जी महाराज, श्रीपतिधाम के संस्थापक और अर्बुदारण्य गोनंदी तीर्थ के संरक्षक श्री गोविन्दवल्लभदास जी महाराज, गो अभयारण्य मालवा के संरक्षक व हमारे सहयोगी महंत श्री रविन्द्रानंद जी महाराज, श्री मनोरमा गोलोक तीर्थ के महंत स्वामी श्री अरूपानंदजी, हमारे पालड़ी गोशाला के संरक्षक तथा साथी गो संत श्री बलदेवदास जी महाराज, जालोर गोशाला के संरक्षक एवं संयोजक संत श्री गोपालदास जी महाराज, हमारे साथी श्री चेतनानंदजी महाराज, रामदासजी महाराज, अखण्डानंदजी महाराज, मंगलपुरीजी महाराज, सीतरामदासजी महाराज, धैर्यरामदास जी महाराज, एवं प्रवृति सभी संतगण तथा श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा के कार्यकारी अध्यक्ष श्री रघुनाथसिंह जी, सुरभि संसद के आज के मुख्य अतिथि श्री राकेश जी बिंदल, हमारे वरिष्ठ गोभक्त एवं पूर्व मंत्री श्री सुखरामजी विश्नोई, श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा के महामंत्री श्री अर्जुन सिंह जी, गोसेवा महानिर्देशक श्री धनराज जी, कोषाध्यक्ष श्री ओमप्रकाश जी अग्रवाल, हमारे प्रिय श्री आलोक जी सिंहल, गो अभयारण्य मालवा के प्रभारी व निर्देशक श्री अम्बा लाला जी सुथार, मनोरमा गोलोक तीर्थ के प्रबन्ध न्यासी श्री ब्रह्मदत्त जी, हमारे इस पूरे परिसर के संरक्षक कहें ठाकुर हरिसिंह जी केशुआ, महावीर हनुमान नंदीशाला के अध्यक्ष श्री राव मोहन सिंह जी, उनके सहयोगी महामंत्री श्री डूंगररामजी, डॉ उदारामजी वैष्णव, श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला पथमेड़ा के अध्यक्ष श्री केशाराम जी सुथार, श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला नंदगांव के अध्यक्ष श्री भूराराम जी नानरवाड़ा एवं ट्रस्ट के विभिन्न वरिष्ठ न्यासी, एक से बढ़कर एक वरिष्ठ गोभक्तों की सूचि बहुत लम्बी है जो यहाँ विराजमान हैं जसराज जी वाली है, मांगीलाल जी पारिक हैं, स्वतंत्र जी हैं, श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला पथमेड़ा के पूर्व अध्यक्ष श्री मदरूपसिंह जी राव हैं, हम सबके प्यारे लाडले श्री देवारामजी जागरवाल हैं, सभी गोभक्त कार्यकर्ताओं को हृदय से सादर हरि स्मरण, जय गोमाता जय गोपाल!

सज्जनों! गत 2 वर्षो में श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा को न्यासियों के गोलोक गमन से एक अपूर्णनीय क्षति पहुँची है। इन दो वर्षो में हमारे 27 न्यासी गोलोक पधारे गये हैं। उनका नाम स्मरण करके हम दो मिनट मौन रहेंगे और 1 मिनट भगवान नाम का सन कीर्तन करेंगे। हम उनका एक बार नाम स्मरण करते हैं- हमारे डांगियावास गौशाला के संचालक संत श्री धर्मानंदजी जी का गोलोकवास हो गया, आज प्रातःकाल गोभक्त श्री दौलाराम जी अणदाजी राजपुरोहित भड़वल का गोलोकवास हो गया, गोधाम महातीर्थ के संस्थापक सदस्यों में से श्री बीजलाराम जी चौधरी वकील साहब कीलवा एवं श्री

हफ्ता राम जी गंगाराम जी राजपुरोहित सांथु का गोलोकवास हो गया, गोभक्त श्री जुगल किशोर जी दाऊलाल जी अग्रवाल बालोतरा वालों का गोलोकं वास हो गया, परम गोभक्त श्री गजानंद जी सूरजभान जी कंचन सूरत का गोलोकवास हो गया, गोभक्त श्री राधा वल्लभ जी जालान सूरत का गोलोकवास हो गया, गोभक्त एवं युवा कार्यकर्ता श्री दलपत सिंह जी मगन जी राजपुरोहित मंडवारिया का गोलकवास हो गया, गोभक्त श्री हीरालाल जी कस्तूरचंद जी पुरोहित दांतराई का गोलोकवास हो गया, गोभक्त श्री गिरधारी जी जांगिड़ राय कॉलोनी बाड़मेर का गोलोकवास हो गया, गोभक्त श्री श्याम मनोहर जी गौरीशंकर जी अग्रवाल गोरखपुर वालों का गोलोकवास हो गया, श्री मंगल सिंह जी गोगाजी राजपुरोहित ओडवाड़ा हुबली का गोलोकवास हो गया, श्री साध्वी नवीन बहन बिजलाराम जी चौधरी डूंगरों का गोलिया का गोलोकवास हो गया, गोभक्त श्री सुल्तान सिंह जी अचल सिंह जी राजपुरोहित बावड़ी का गोलोकवास हो गया, गोभक्त गोभक्त श्री कांतिलाल जी चतुर्भुज जी राजपुरोहित डूंगरी मुंबई का गोलोकवास हो गया, संत श्री जगदीश चेतन्य जी ब्रह्मचारी जो नंदगांव में रहते थे उनका गोलाकवास हो गया, गोधाम पथमेड़ा के प्रारंभ में ही जुड़े हुए हमारे ब्रह्मचारी अनंत चेतन जी के पूर्व आश्रम के पिताजी श्री जोगराज जी करना जी बासड़ा धनजी का गोलकवास हो गया, गोभक्त श्री नरपत सिंह जी फौजराज जी राजपुरोहित रमणीया गोलकवास हो गया, गोभक्त श्री अशोक जी भालोटिया जमशेदपुर का गोलोक पास हो गया, गोभक्त श्री थानाराम जी मगाजी राजपुरोहित आमली चितलवाना का गोलोकवास हो गया, गोभक्त श्री रमेश जी बालचंद जी जैन कोलकाता का गोलोकवास हो गया, गोभक्त श्री दीपसिंह जी मेघसिंह जी राजपूत कारोला का गोलकवास हो गया, महंत श्री जंगली दास जी मोहन जी महाराज के नाम से प्रसिद्ध नासिक के महाराज का गोलकवास हो गया, गोभक्त श्री कालूसिंह जी दर्जाजी जी राजपुरोहित रेवतड़ा कोयंबटूर का गोलकवास हो गया, गोभक्त श्री राजीवजी गोपीरामजी अग्रवाल अहमदाबाद का गोलक वास हो गया, गोभक्ता श्रीमती जीवनी देवी चुन्नीलाल जी सूरत का गोलोकवास हो गया, गोभक्ता श्रीमती शांतिदेवी रूपचन्दजी दिल्ली का गोलोकवास हो गया। इस तरह श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा ने अपने 27 गोभक्त कार्यकर्ताओं को खोया है। उनकी अनुपस्थिति की पूर्ति का कोई और विकल्प नहीं है। भगवान के चरणों में, गोपाल के चरणों में प्रार्थना करते हैं कि उन्हें पुन: गोसेवा के लिए ही मानव शरीर में भेजें अथवा अपने गोलोक में ही रखें। इसी भाव के साथ में 2 मिनट का हम सब मौन रखें और फिर राम नाम कीर्तन के साथ आगे की चर्चा करेंगे। राऽऽऽऽम।.. .... रामा श्रीरामा, रामा श्रीरामा, रामा श्रीरामा। बोलिये रामचंद्र भगवान की जय! मोर मुकुट बंशी वाले की जय! नारायण! नारायण! नारायण!

सज्जनों! आप हम सभी जानते हैं कि गोमाता की महिमा हमारे सनातन धर्म के अनुसार अपरंपार है उनकी कोई उपमा नहीं है। गोमाता की महिमा को बढ़ाने के लिए भगवान धरा पर अवतार लेते हैं। भगवान के अवतारों के पीछे जो प्रधान कारण हैं उसमें गो महिमा का विस्तार एक है या यों कहें कि गोमाता की महिमा का विस्तार ही प्रधान कारण हैं बाकी सब सामान्य हेतु हैं। जिनके लिए भगवान स्वयं आते हैं धरती पर और उनकी सेवा सुषश्रा में लगते हैं और हम सबको बतातें हैं कि किस तरह से गोमाता की सेवा करनी चाहिए, उस गोमाता की महिमा का बखान कौन कर सकता है। आप सभी गो महिमा से परिचित हैं तभी तो गो महिमा में लगे हैं और आपने गो महिमा का अनुभव कर लिया है गोसेवा करके वर्षो से। आप गोसेवा कर रहे हैं 30 वर्ष हो गए हैं। हर वर्ष करोड़ों रुपयों का चारा गोमाता को जीमाते हैं। अगर गो महिमा का अनुभव न होता तो आप बार-बार क्यों सहयोग करते और यहाँ क्यों उपस्थित होते? इसलिए आपको गोमाता की महिमा बताने की आवश्यकता नहीं है बस यही है कि आज का यह

कार्यक्रम जो सुरभि संसद का इसके लिए 4000 सदस्यों में से 27 सदस्य खो दिए उसकी पीड़ा है, पर भगवान से प्रार्थना है कि उन्हें नवीन कलेवर में और अदम्य ऊर्जा के साथ पुनः इस अभियान में लगाएं।

इस अधिवेशन में भाग लेने के लिये कार्यालय क्षरा आप सबको पत्र भेजे थे और सबसे फोन पर सम्पर्क कर पधारने के लिये जानकारी की गई थी जिसमें 2700 जनों ने आने का हाँ कहा था लेकिन हम स्थिति देख रहे हैं उसकी चौथाई उपस्थिति भी होगी नहीं। इस व्यवहार में कैसे सुधार हो? हम अपने साथियों को कहें कि ऐसी जगह पर हल्के ढंग से हाँ या ना नहीं कहना चाहिए, खूब सोच समझकर जवाब देना चाहिये। हाँ कहो तो बहुत समझकर कहो और ना कहो तो भी खूब सोच समझकर कहो क्योंकि जो लोग तैयारी करने वाले हैं वे तो बहुत परेशानी में पड़ जाते हैं। 2700 लोगों की तैयारी करना और फिर उसमें उपस्थिति इतनी कम होती है अथवा ज्यादा होती है तो उनको परेशानी भी होती है तथा धक्का भी लगता है। आप तो सब यहाँ उपस्थित हो ही, आपके संपर्क में जो भी सदस्य आए उनसे आप चर्चा कर सकते हैं कि आने का या सही उत्तर देने का थोड़ा अभ्यास बनाओ।

एक महीना से आपको लगातार निवेदन कर रहे हैं और 15 दिन से तो प्रतिदिन आपको सूचना आ रही है फिर भी आप अपनी सही जानकारी अपने आने की या न आने की नहीं देते हो यह अच्छी बात नहीं। यद्यपि आप अन्नदाता है, हम आपको और अधिक कुछ कह नहीं सकते पर आप सभी जिस सेवा से जुड़े हैं, जिस संस्थान से जुड़े हैं उस सेवा और संस्थान के आप आधार कहो, मालिक कहो, प्रेरक कहो वे स्वयं भगवान हैं। भगवान गोपाल का कार्य आप सब कर रहे हैं। भगवान गोपाल के कार्य में हमें जीवन लगाने का अवसर मिलता है यह अपना सौभाग्य समझना चाहिए। आप भगवान की कृपा का अनुभव कर चुके हैं कि इस गोसेवा अभियान में भगवान की कितनी कृपा है आप में से अनेक भाइयों ने इसका अनुभव किया है, अनेक बार किया है और माया इतनी प्रबल है कि तुरंत ही जैसे काई पानी पर छा जाती है ऐसे वह माया हमारे मन पर, हमारी बुद्धि पर छा जाती है।

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा की स्थापना का मुख्य उद्देश्य भगवती गोमाता की महिमा को जन मन में स्थापित करना, वेद लक्षणा गोवंश का संरक्षण करना, उनका संपोषण करना, उनका समर्थन करना आदि भावों को लेकर हुई है। गत 30 वर्षों में भारत के सभी संतो ने, सभी महापुरुषों ने, सभी धर्मात्माओं ने इस गोसेवा महायज्ञ को अपना आशीर्वाद, अपनी सद्भावना और अपना-अपना सहयोग प्रदान किया है। ऐसा हम नहीं कह सकते कि किसी एक व्यक्ति, कोई समूह, कोई एक दल, किसी एक क्षेत्र के द्वारा यह कार्य हुआ। पूरे भारतवर्ष के गोभक्तों ने गोप्रेमी संतों ने और गौसेवा भावी समाजों ने यह सहयोग दिया है।

प्रत्येक रूप से भले ही हम यहाँ डेढ़ लाख गोवंश की बात करें, पर 1999 से पहले और 1999 के बाद का जो भारतवर्ष के मानचित्र पर स्वरूप है उसकी अगर आप समीक्षा करें तो गौशालाओं के माध्यम से पिछले इन 25 वर्षों में लगभग 50 से 60 लाख गोवंश अभी भी सुरक्षित और संपोषित हो रहा है और अभी भी इसके मूल में प्रेरणा श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा की ही है। इतना ही नहीं आप में से बहुत से लोग यह जानते हैं कि 12 करोड़ भारतीय वेदलक्षणा गोवंश आज भारत में अगर विद्यमान है तो उसकी उपस्थिति का कारण भी यही है अन्यथा सन् 2000 से 2003 तक चार वर्ष तक राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, कर्नाटक और तेलंगाना आदि राज्यों के बड़े भाग में ऐसे दुष्काल थे उसका अगर आप श्रवण करें और जिस तरह से अंधाधुंध तरीके से गोवंश की हत्या हो रही थी 1999 से पहले उस सबकी कल्पना करें तो.......शेष अगले अंक में

श्री कामधेनु कृपा प्रसाद

(परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज)

प्रार्थना क्या है?

पिछले अंक से आगे......

अब प्रश्न उठता है कि उनसे क्या मांगे और किसके लिए मांगे? यदि हम व्यक्तिगत अपने लिए मांगते हैं तो व्यक्तिगत का तो अस्तित्व ही नहीं है। अगर विचार करें तो व्यक्तिगत का तो कोई अस्तित्व ही नहीं है, क्योंकि शरीर हम है नहीं। अगर हम शरीर के लिए मांगते हैं तो शरीर और संसार का विभाजन हो सकता नहीं। इसलिए इस प्रार्थना में इस बात का ध्यान रखा गया है कि हम अपने लिए नहीं मांगेंगे, सबके लिए मांगेंग। सुख-दुःख के बंधन से सभी मुक्त हो जाएं, मैं मुक्त हो जाऊं ऐसा नहीं कहा, प्रेम को सब पा जाए ऐसा कहा। सारे संसार के साथ एकता स्वीकार कर ली गई तो मांगा क्या? यह नहीं मांगा गया कि हमारे जीवन में जो दुःख है वह चला जाए, सुख है वह बना रहे। जो दुःख है वह चला जाए ऐसा नहीं मांगा, यह मांगा कि दुःखी प्राणियों के हृदय में त्याग का बल और सुखी प्राणियों के हृदय में सेवा का बल, गोसेवा का बल प्रदान करें। अर्थात् दुःख आवे तो सुख के त्याग का सामर्थ्य दें और सुख आवे तो गोसेवा करने का सामर्थ्य दें।

इस प्रार्थना के मूल में तो 'सेवा' शब्द था। जो 1993 के बाद 'गोसेवा' किया गया है। हम लोग इसलिए 'गोसेवा' कहते हैं कि जब सेवा कहते हैं तो समझ में नहीं आता, सेवा परमात्मा की होती है, सेव्य में कोई दोष न हो और यह जगत भी भगवान का स्वरूप ही है, पर सामान्यतः क्रियात्मक रूप से किसी न किसी पवित्र माध्यम से सेवा की शुरूआत होगी तो इस धरती का पवित्र से पवित्र, पवित्रत्तम माध्यम पूज्या गोमाता है। इसलिए सेवा के आगे 'गो' शब्द भगवान दत्त की कृपा से लगाया यद्यपि इस प्रार्थना के मूल स्वरूप में केवल 'सेवा' शब्द हैं पर इस अभियान की शुरूआत 1993 में होने के बाद यह संशोधन किया गया।

इस प्रार्थना में प्राणियों के हृदय में त्याग के बल की मांग क्यों की गई? जरा गंभीरता से सोचें कि दुःख क्या है? इस प्रकार आप विचार करेंगे तो मानना पड़ेगा कि आप सब कुछ चाहते हैं। आप जब कुछ चाहते हैं और वह आपकी मांग या चाह पूरी नहीं होती है तभी आप दुःख का अनुभव करते हैं। हम जो चाहते हैं वह होता नहीं और जो होता है वह भाता नहीं और जो भाता है वह रहता नहीं यह बात जब हमारे आपके सामने आती है तब हम कहते हैं कि हम तो बड़े दुःखी हैं। क्यों? क्योंकि जो बात हम चाहते हैं वह हुई नहीं।

आप गंभीरता से विचार कीजिए! क्या संसार में कोई ऐसा व्यक्ति है जिसकी सभी कामनाएं पूरी हो गई हो? कोई एक व्यक्ति भी ऐसा बताओ। कभी कोई सुना हो, इतिहास में पढ़ा हो या देखा हो कि उस आदमी की सारी कामनाएं पूरी हो गई। ऐसा एक भी व्यक्ति आपको नहीं मिलेगा। अगर कोई ऐसा व्यक्ति हो तो बताओ। है कोई जानकारी में? नहीं है। तो जिसके संबंध में आप यह कह ही नहीं सकते, एक भी व्यक्ति ऐसा आप नहीं बता सकते जिसकी सारी कामनाएं पूरी हो गई हो।

हमारा विचार ऐसा है, हमने ऐसा सुना है, समझा है, सोचा है, हमें ऐसा मालूम होता है कि ऐसा व्यक्ति तो मिल सकता है जिसकी सभी कामनाएं नष्ट हो गई हो। ऐसा व्यक्ति तो मिल सकता है कोई

जिसकी समस्त कामनाएं निवृत हो गई है। आपको मिला या नहीं मिला हमें पता नहीं, पर हमको तो ऐसे व्यक्ति मिले हैं। ऐसे व्यक्ति का दर्शन हमने किया है जिनकी सारी कामनाएं समाप्त हो गई, पर ऐसा एक भी व्यक्ति मिला नहीं, एक भी व्यक्ति ऐसा सुना ही नहीं जिसकी सारी कामनाएं पूरी हो गई हो। हमने ऐसे व्यक्ति का दर्शन किया है जिनकी समस्त जिज्ञासाएं पूरी हो गई हो, जिनको प्रेम की प्राप्ति हो गई हो ऐसे व्यक्ति, ऐसे महानुभवों के हमने दर्शन किए, परंतु ऐसा व्यक्ति नहीं मिल सकता जिसके लिए आप कह सकें कि उसकी सभी कामनाएं पूरी हो गई हो। इससे यह सिद्ध हुआ कि समस्त कामनाओं की पूर्ति नहीं होती, निवृति होती है।

सोचिए! जरा गंभीरता से सोचिए! जब सभी कामनाएं पूरी हो ही नहीं सकती तो इससे निर्विवाद सिद्ध होता है कि कामनापूर्ति मात्र हमारे आपके जीवन का लक्ष्य नहीं हो सकता। आपकी हमारी यह वास्तविक आवश्यकता नहीं है। ये जो कामनाएं हैं ये हमारी वास्ताविक आवश्यकता नहीं है। हम यह अवश्य कह सकते हैं कि कामना पूर्ति का जीवन में स्थान है और कामना अपूर्ति का भी जीवन में स्थान है। यह किस लिए? कामना पूर्ति किस लिए है? कामना निवृत्ति के लिए कामना पूर्ति है। जैसे मेरे मन में रसगुल्ला खाने की कामना है तो यह कामना मुझे शांत नहीं रहने देती है, मेरी शांति को भंग कर रही है। तो यह इसकी पूर्ति के लिए, इस काम की पुन: शांति की प्राप्ति के लिए या अशांति से मुक्त होने के लिए कामना पूर्ति का स्थान है। अगर रसगुल्ला मिल जाए, पा लिया तो फिर कामना निवृत हो जानी चाहिए, वापस दूसरी बार यही कामना नहीं होनी चाहिये, इतना स्थान तो मान सकते हैं। पर आपको रसगुल्ला मिल गया तो फिर गुलाब जामुन खाने की कामना पैदा हो गई तो कामना का अंत कैसे होगा? कामना से कामना, कामना पूर्ति से फिर नवीन कामना जन्म लेती रहती है और यह श्रृंखला चलती रहती है। अच्छा, रसगुल्ला मिल गया ऐसे ही गुलाब जामुन भी मिल ही जाएंगे यह जरूरी थोड़े ही है। यह मिले भी और भी मिले। तो कोई कामना पूरी होती है वह इसलिए होती है कि उस कामना की निवृत्ति हो। कोई पूरी नहीं होती है वह भी हमें शिक्षा देने के लिये कि कामना मत करो। इस प्रकार कामना की पूर्ति और अपूर्ति दोनों ही हमें कामना की निवृति की प्रेरणा देते हैं। चलो रसगुल्ला तो खा लिया, अब गुलाब जामुन और मिल जाए यह तो है नीचे जाने की बात पर अब रसगुल्ला खाने के बाद यह निश्चित करना कि ठीक है, गुलाब जामुन भी छोड़ो, पेड़ा भी छोड़ो, रसगुल्ला पा लिया पूरा हुआ। क्योंकि आखिर इससे मिलना क्या है। रसगुल्ला इतने दिन से पकड़े हुए थे और सामने लाकर रख दिया पाओ 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7 खाते-खाते ऊब गया, चलो हटाओ, अब नहीं खा सकता। लेकिन कुछ समय बाद फिर रसगुल्ला खाने का मन हो जायेगा।

कोई भी चीज की जो आपके अंदर मांग है, भाई कामना है वह कामना पूर्ति होने पर भी आपको संतुष्टि नहीं दे सकती। क्योंकि संतुष्टि देने का उसमें सामर्थ्य है ही नहीं। उसका तो समाधान निवृत्ति में है। जब हम और आप इस बात को भली-भांति जान लेते हैं कि कामना पूर्ति भी कामना निवृत्ति के लिए है और कामना अपूर्ति भी कामना निवृत्ति के लिए है, तब हमको यह मानना पड़ेगा कि आप जिस कामना अपूर्ति से दु:खी हैं यदि उस कामना के त्याग का बल आपके जीवन में आ जाए तो दु:ख जैसी कोई वस्तु जीवन में रह नहीं सकती, क्योंकि कामना अपूर्ति से भी वही चीज मिलनी है जो कामना पूर्ति से मिलनी है। यह बात अगर ठीक तरह से समझ लेते हैं तो कामना अपूर्ति से दु:ख नहीं होगा। यह कहने का तात्पर्य है कि दु:ख का कारण होता है मन की इच्छा पूरी नहीं हुई। हम इसलिए दु:खी होते हैं मन की इच्छा

पूरी होने से हमें कोई वास्तविक सुख तो मिलना नहीं। इस रहस्य को समझने के बाद में इच्छा की पूर्ति और अपूर्ति के सुख और दु:ख में साधक फसता नहीं है।

कल्पना करो कि एक अंधा व्यक्ति देखना चाहता है और सारा संसार मिलकर उसकी सहायता करे पर जब तक देखने की शक्ति उसे न मिले तो किसी और की सहायता से वह उस कामना को पूरा नहीं कर सकता, लेकिन यदि वह विचार करे और यह सोचे कि गहरी नींद में तो सभी अंधे होते हैं, जब सुसुप्ती आती है तो सब अंधे ही होते हैं, कोई कुछ नहीं देखता। तब यदि 6 घंटे आप बिना देखे रह सकते हैं तो आजीवन भी बिना देखे रह सकते हैं। तो अंधेपन का जो दु:ख था वह समाप्त हो जाएगा अथवा देखते-देखते भी आखिर में न देखना ही होता है। जो देख रहे हैं अंत में तो सबको नहीं देखना है। ऐसी कोई कामना है ही नहीं जिसकी पूर्ति अखंड हो, जो सदैव पूरी हो सके। यह बात सबको माननी पड़ेगी।

तो भाई अंधे हो जाने पर देखने की वासना का त्याग करना कोई कठिन बात नहीं है। इससे यह सिद्ध होता है कि किसी का दुख तभी मिट सकता है जब उसमें त्याग का बल आ जाए, नहीं तो सारा संसार मिलकर भी एक व्यक्ति के दु:ख का नाश नहीं कर सकता। आप अपना सुख बांट सकते हैं पर आप किसी का दु:ख मिटा सकते हैं क्या? नहीं मिटा सकते। यह किसी के वश की बात नहीं है। आप कहेंगे कि कोई व्यक्ति तो ऐसा नहीं कर सकता, लेकिन जो व्यक्ति नहीं है जो सब प्रकार से समर्थ है वह तो ऐसा कर सकता है। भाई मनुष्य तो मनुष्यों के दु:खों को नहीं मिटा सकता, प्राणियों के दु:खों को कोई व्यक्ति नहीं मिटा सकता पर जो सर्व समर्थ परमात्मा है वह तो सबके दु:खों को मिटा सकता है ऐसा आप कह सकते हैं। तो भाई मेरे उसी का तो यह विधान है कि दु:ख में त्याग का बल हो यह व्यक्ति का निर्णय थोड़ा ही है। त्याग के बल से दु:ख का भय चला जाता है। दूसरी बात कि आप सोचते हैं कि दु:ख जीवन का आवश्यक अंग नहीं है यह बड़े प्रमाद की बात है।

मेरे भाई सुख की अपेक्षा दु:ख कहीं अधिक जीवन में आवश्यक है। जीवन के विकास में, जीवन के उत्थान में और जीवन के लक्ष्य की प्राप्ति में सुख से भी दु:ख की बड़ी भूमिका है। यदि आप सत्य पर विचार करेंगे तो जीवन का आरंभ दु:ख से है, सुख से नहीं है। सच है न यह बात? जीवन का आरंभ कैसे है बताओ? बालक जब उत्पन्न होता है तो सबसे पहले वह रोता है। सच है कि नहीं? तो जीवनकाल का आरम्भ दु:ख से हुआ। अगर कोई बालक रोता नहीं है तो कहते हैं कि उसमें किसी प्रकार की कमी है। अंग्रेजी में कहते हैं कि ऐबनॉर्मल है वह। नॉर्मल बालक जो होगा वह पैदा होते ही रोएगा। रोने का मतलब उसको कोई दु:ख है।

तो जीवन का आरंभ ही दु:ख से होता है और जिस जीवन का आरंभ भी दु:ख से हुआ है उस जीवन में किसी प्रकार का दु:ख न हो यह सोचना बेकार है। लेकिन एक बात अवश्य है कि परिवर्तनशील जीवन में हम दु:ख का अनुभव करते हैं वह वास्तव में जीवन नहीं है। जीवन की तो मांग है, जीवन की तो आवश्यकता है और वह जीवन की आवश्यकता कैसे पूरी होगी? जब हम दु:ख में क्या करना चाहिए यह मान लें, सुख में क्या करना चाहिए यह मान ले तब हमें सुख दु:ख से अतीत जीवन की प्राप्ति होगी। जीवन उसको कहते हैं जिसमें मृत्यु ना हो। हम जिसे दु:खसुखमय जीवन कहते हैं वह जीवन नहीं है, यह दु:खमय और सुखमय यात्रा है। ये तो वास्तविक जीवन को प्राप्त करने के साधन हैं अथवा वास्तविक जीवन की लालसा है।

तो इस मूल सत्य को सामने रखकर इस प्रार्थना में यह कहा गया कि जो हमारे अपने हैं जिनकी कृपा अहेतुकी है जो सर्व समर्थ है, जीवन देने वाली है, पवित्र करने वाली है,......लगातार

श्री कामधेनु कृपा प्रसाद

(परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज)

गाँव-गाँव हो गोपालन और गोकृषि

प्रयास यह करो कि आपके गाँव का गोवंश आपके गाँव में रहे। गोशालाओं को सरकार ने भी अनुदान देना प्रारंभ किया, पहले तो हम लोगों को डर था की गोशाला शुरू कर देंगे तो चलेगी कैसे और सभी गोभक्तों के प्रयास से, संतों के संकल्प से राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड आदि कई राज्यों ने गोग्रास के लिए अनुदान देना प्रारंभ किया है। गुजरात में भी सरकार ने 30 रुपये प्रतिदिन प्रति गोवंश अनुदान प्रारंभ किया है। आगे यह प्रयास करेंगे कि यह राशि बढ़े क्योंकि खर्चा बहुत ज्यादा आता है, 30 रुपये में गोवंश की पुष्टि होती नहीं है और यह बढ़ेगा। इसलिए बिना डरे गांव में कोई भी गाय भूखी-प्यासी दुःखी हो, उसको गोशाला में लेना है। बछड़े नंदी जो घर में गाय भी ब्याती है और बछड़े बड़े होते हैं तो वो बछड़े आप गोशाला में या नंदीशाला में भेजें, उनको सड़कों पर निराश्रित नहीं छोड़ें।

आज यहाँ सभी बिरादरी की माताएं, बहनें और भाई लोग विराजे हैं तो आप सभी से हमारा अनुरोध है कि घरों में आप गायों को रखें, गायों का दूध बच्चे-बच्चियों को पिलाएं, इससे इनकी प्रज्ञा अच्छी होगी, शरीर स्वस्थ रहेंगे, सुंदर भी रहेंगे और विद्वान भी बनेंगे। गर्भिनी माताओं को भी गाय के दूध में घी डालकर दिया जाए तो उनके गर्भावस्था शिशु का भी अच्छा पौषण होगा, शिशु सुडौल और सुंदर बनेगा। बड़े-बूढ़े मां-बाप है उनको भी गाय का दूध देंगे तो व सुपाच्य होने से पच जाएगा भैंस का दूध पचता नहीं है। बीमार व्यक्ति को भी गाय का दूध दें, जल्दी शक्ति देता है। तो गाय का दूध, दही, घी, छाछ, मक्खन भोजन में आपको मिलना चाहिये। छोटे-छोटे बच्चों को गाय का ताजा मक्खन मिले। यह सारे पदार्थ मिलने चाहिए। इससे आरोग्य भी बढ़ेगा स्वास्थ्य सुंदर होगा, शरीर सुंदर होगा, सुडौल होगा, बुद्धि बढ़ेगी, हृदय भी निर्मल पड़ेगा।

तो अब उसमें समस्या यह है कि घर में गाएं रखते हैं तो ब्याती है, बछड़े लाती है तो कहाँ भेजें? उसके लिए यह विकल्प तैयार किया नंदीशाला का। गाँव की गोशाला में एक भाग नदियों का और एक भाग गोमाताओं का रखो और अगर उसमें गोवंश बढ़ जाए, क्योंकि हर साल गाएं ब्यायेगी तो बछड़े तो बढ़ते जाएंगे, जब बछड़े बढ़ जाए कि अब संख्या ज्यादा हो रही है तो आप तड़ाव बड़ी नंदीशाला भेज सकते हो और फिर गोष्ठ खाली हो जाए तो हर वर्ष गांव के बछड़े लेते रहो।

घर-घर में गोपालन का लक्ष्य था हमारा कि घर में गायों का पालन होगा तो लोगों को गाय का दूध भी मिलेगा, गोमाता का सानिध्य मिलेगा और गोमाता के दर्शन भी मिलेंगे। गोमाता की उपस्थिति हमारा कल्याण करने वाली है। बड़े-बूढ़े, बच्चे बच्चियों सभी गोमाता की सेवा कर सकते हैं, गोमाता के शरीर पर हाथ फेर सकते हैं, प्रणाम कर सकते हैं स्कूल जाने से पहले गोमाता की चरणरज मस्तक पर चढ़ा सकते हैं। गाय के गोबर का तिलक करने से भूत-प्रेत कोई निकट नहीं आता है और मंगल ही मंगल होता है। प्रतिदिन थोड़ा सा गाय का गोमय लेकर तिलक लगाना चाहिए। बच्चों को, बच्चियों को, माताओं को, भाइयों को गोमय का तिलक अवश्य लगाना चाहिए। गोरज अथवा गोमय मस्तक पर चढ़ाने से अनेक दोषों का निवारण हो जाता है।

गाए घर में होगी तो गोमय देगी। गोमय का

खाद खेत में जाएगा तो खेत की धरती पुष्ट होगी, पुष्ट धरती से प्राप्त अन्न, फल, सब्जियाँ, दालें आदि आपको आरोग्य देगी, पौषण देगी। तो गोमाता की सेवा से धरती माता की सेवा होगी, अपनी सेवा होगी, देवताओं की सेवा होगी, सबकी सेवा गोसेवा में समाहित है। अनुरोध है कि यह धरती माता हमारी अपनी माँ है इनको अगर हम कीटनाशक और डीएपी यूरिया जहर डालते हैं और उससे उत्पन्न हुआ अनाज रसोई में लाते हैं तो वह रसोई में रोग उत्पन्न करता है, पूरा परिवार रोगी हो रहा है, जहर पेट में जा रहा है। इसलिए माताओं से प्रार्थना है कि वह भाइयों को कहे कि खेत में जो अनाज हो उसमें डीएपी-यूरिया और कीटनाशक नहीं होना चाहिए। जो अनाज आप लो वह शुद्ध हो।

वह कैसे होगा? गाय के गोबर की खाद बनाकर धरती में दो, उससे फसलें उत्पन्न करो। 40-50 साल पहले डीएपी-यूरिया नहीं था तो हमारे यहाँ अन्न शुद्ध होता था। उस समय केवल बारिश की खेती होती थी। अब नर्मदाजी का जल आया है तो तीनों मौसम में खेती हो सकती है और पहले तो बाजरी, मूंग, ग्वार, ज्वार आदि ही लगा सकते थे अब तो सब लगा सकते हो। फल भी लगेंगे औषधियाँ भी हो जाएगी, सब प्रकार की सब्जियाँ भी होगी, तरबूज, खरबूजा, जिया ककड़ी, परवल, दूधी, भिंडी आदि सब सब्जियाँ हो जाएगी, सब फल हो सकते हैं। अमरूद के फल लगाओ, आम के लगाओ जामुन के लगाओ, ये सब फल हो जाएंगे। खेतों में वट, पीपल, जामुन सारे पौधे लगाकर देखो।

तो सज्जनों कहने का भाव यह है कि यह जो प्रवास है वह नंदियों के लिए है, जैसा कि हमारे श्याम स्वरूप जी महाराज ने कहा कि नंदियों की सुरक्षा के लिए तो है, पर नंदी धर्म है, धर्म की रक्षा होगी तो अपनी रक्षा होगी। जो धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है। अतः बछड़े अपने घर में रखो, दूध पिलाओ और बाद में सूना मत छोड़ो भूखा मत मारो। जब घर पर नहीं रख सको तब गोशाला भिजवा दो और सामर्थ्य हो तो साथ में चारा भेजो, हर साल फसल होती है। अकाल के समय भी चारे का दान करते थे। अब तो पानी है खूब, खूब जल रहा है नहर में। खूब बाजरी लगाओ, मकई लगाओ, ज्वार लगाओ। उसका चारा हो गया, दाना हो गया। जो लगाओ दाना भी अच्छा होगा चारा भी अच्छा होगा।

गाय के गोबर, गोमूत्र की खाद डाल कर खेती करो बस एक ही प्रार्थना है बारंबार। एक बात हम आपके बीच में बार-बार दोहराना चाह रहे हैं। इसे हमारी याचना समझिए आप चाहे भिक्षा समझिए बस एक ही बात है कि धरती माता की सेवा करो। धरती माता और गोमाता दो अलग नहीं है, दोनों एक ही है। धरती की सेवा से गोमाता की सेवा होगी और गोमाता की सेवा से धरती माता की सेवा होगी। जैसे चारा देने से गोमाता की सेवा होती है और पुण्य होता है, ऐसे ही गाय के गोबर की खाद खेत में डालने से धरती माता की सेवा होती है और पुण्य की प्राप्ति भी होती है। खेत आपका है, फसल आपको मिलेगी पर पुण्य अलग से मिलेगा। धरती को भोजन देने का अभी तो पाप लग रहा है, जहर दे रहे हैं धरती को। डीएपी, यूरिया डाल रहे हैं, कीटनाशक डाल रहे हैं, यह विष है। डरो मत, गाय के गोबर की खाद डालने से धीरे-धीरे बहुत बढ़िया फसल होगी। बहुत जल्दी हम लोग किसानों को गो आधारित खेती के लिए प्रशिक्षण केंद्र प्रारंभ करने वाले हैं।

कल बियोक में बैठक होगी, उसके लिए आप उजनवाड़ा और आसपास के गाँवों से भी भाई लोग पधारना। वहाँ हम जा रहे हैं कि बियोक में 32 एकड़ जमीन है उसमें एक ट्रेनिंग सेंटर, एक प्रशिक्षण केंद्र खोलने का भाव है। जल्दी ही गाय के गोबर से कितनी तरह की खाद बनती है, कितनी वह प्रभावी है इस पर वृहद प्रयोग होगें। जैसे डीएपी का एक कट्टा एक एकड़ में डालते हैं और धरती को भी

जहरीला बनाता है, आपको भी रोगी बनाकर 1500 रुपये का खर्चा भी होता है। उसी जगह आप 4 कट्टा गाय के गोमय की प्रोम खाद डालेंगे तो वह धरती को पुष्ट करेगी और वह रुपये 1200 में ही आ जायेगी। उसमें भी अगर घर की गाएं, नंदी, बैल हैं तो बहुत कम खर्चे में खाद तैयार हो जाएगा। गाय से भी नंदी के गोबर में उर्वरा शक्ति ज्यादा है धरती को पौषण देने वाली। इसलिए घर में खाद बनावे उसका प्रशिक्षण बियोक में देंगे तो लोग घरों में ही खाद बना दे और अपने खेत में डाल दें।

एक नंदी का खाद एक एकड़ जमीन को पुष्ट करता है, एक एकड़ जमीन। आप देखो तीन मौसम में आप डीएपी यूरिया आदि डालकर खेती करते हो और उपज जहरीली होती है, उसकी बजाय अच्छे से तैयार किया हुआ गोबर का खाद डालकर खेती करोगे तो उपज भी शुद्ध और सात्विक होगी और धरती भी पुष्ट होगी। तो भाई इतनी सी प्रार्थना है कि आप गाय का दूध, दही, घी, छाछ घर में, परिवार में भोजन में उपयोग में लें और गोबर गोमूत्र की खाद से उत्पादित अन्न, फल, दालें, सब्जियों का उपयोग करें।

आप सभी धर्मात्मा हैं, आपके घरों में गोमाता तो पहले से ही होगी, गीता जी भी होगी, रामायण भी होगी, तुलसी जी भी होगी, हमारे बालक बालिकाएं सभी गोव्रती बनें, सबको गोदुग्धान्न मिलें। गाय के दूध से प्रज्ञा बढ़ेगी, पढ़ाई में भी वे सफल होंगे और स्वस्थ भी रहेंगे। इसलिए उन्हें गोदुग्ध दो, धर्म शास्त्रों का संस्कार डालो। अगर बालक बालिकाएं ठीक होंगे तो वह भविष्य है समाज का, राष्ट्र का, सबका भविष्य वही है। हम लोगों ने तो चलो उम्र पार कर ली शायद 70 वर्ष के हो गए और जो नई उम्र के भाई लोग हैं वे दुर्व्यसन न करें, जहरीला भोजन न करें अर्थात शुद्ध अन्न ले और अभक्ष्य भक्षण ना करें जैसे गुटका वगैरह खाकर आँतें बिगाड़ते हैं। छोटी उम्र वाले भाई बहन ऐसा नशा करते हैं तो उनके सन्तान में भी असर पड़ता है। तो भाइयों, बच्चों कोई बुड्ढे हो गए हो और नशा करते हैं उनका तो कोई नहीं, केवल उनको ही शरीर बिगड़ता है। संभव हो तो वे भी छोड़ दे और दूसरों को न सिखावे, दूसरों के सामने नशा न करे। पर कम से कम छोटी उम्र के लोग तो दुर्व्यसन में न पड़ें, शुद्ध आहार लें और स्वाध्याय करें। ब्राह्मण घर में जन्म लिया हो तो आपको गायत्री का अधिकार है।

गायत्री गोमाता की पुत्री है और वेदों की मां है। गीता जी सभी के लिए है आप किसी भी हिंदू के घर में जन्म लिया हो तो आपको रामायण और गीता पढ़ने का अधिकार है। गायत्री तो केवल विप्र कुल में ही पढ़ सकते हैं, पर रामायण और गीता तो किसी भी कुल में जन्मे हुए भाई-बहन का स्वाध्याय कर सकते हैं। गायत्री मंत्र का जप तो केवल पुरुष ही कर सकते हैं पर गीता का स्वाध्याय तो सभी भाई बहन कर सकते हैं और हरि शरणम्, हरि शरणम् छोटा सा मंत्र है यह तो सब कर सकते हैं। पहले तो लोग पढ़े-लिखे नहीं थे, पर तो घर में बहुएं-बेटियें पढ़ी-लिखी है तो घर अपने मां-बाप, सास ससुर को गीता का एक अध्याय सुबह, गीताजी का एक पाठ करके सबको सुनाओ। ऐसा करने से गीता मां की कृपा होगी। गीता साक्षात् गोविंदा का रूप है। जिसके घर में गोमाता हो और गीता माता हो तो वे घर लौकिक और आध्यात्मिक दोनों समृद्धियाँ से परिपूर्ण रहते हैं। उस घर में दोनों ही स्मृद्धियों रहती है।

सज्जनों आप सबको यहाँ बैठे-बैठे बहुत समय हो गया है और बड़ी श्रद्धा व उत्साह से विराजे हैं। हम एक ही विषय बार-बार कह रहे हैं कि गोव्रती बनो। गोव्रती बनो मतलब अपने उपार्जन का, अपनी आय का, खेतों में, यहाँ व्यापार में, जहाँ भी उत्पादन है उसका एक हिस्सा बिना दूध वाली गायों जो गोशाला में रहती है उनके लिए निकालो। भोजन में, उपासना में, औषधि में गो दुग्धान्न और गोकृषि अन्न का ही उपयोग करो..........शेष अगले अंक में

ठाकुरजी कब आओगे

(भगवत प्रेरणा से)

पिछले अंक से आगे.........पूज्य देवराह बाबा प्रतिदिन आपश्री को फल प्रसाद अपने करकमलों से देते और गंगा स्नान करने जाते तब साथ लेकर जाते और गोमहिमा सुनाते-सुनाते चलते थे। कल्पवास में अनेक बार दिव्य ऋषिमुनी, सिद्धसंत दर्शन देते थे। बसंत पंचमी का स्नान करके प्रस्थान हेतु बाबाजी से आज्ञा मांगी तो बोले अच्छा बच्चा अभी घूमो फिरो हिमालय दर्शन कर आओ। आगे बहुत कुछ शेष है। मानसरोवर हंस रहते हैं अधिकारियों को मिलते हैं। लो यह फल प्रसाद ले जाओ रास्ते में फलाहार कर लेना। इस तरह पूज्य देवराह बाबा से प्रेम सहित विदाई लेकर आपश्री और दिव्यानंदजी पुनः मनोरमा नदी के तट पर आ गए।

होली के पश्चात यहाँ से काठमाण्डू, मुक्तिनाथ, दामोदर कुण्ड, मानसरोवर यात्रा का लक्ष्य लेकर दोनों ने प्रवास प्रारंभ किया। पथ व्यय का प्रबंध दिव्यानंदजी के पास था। गौरखपुर आए, इधर से बहिरायच नेपालगंज होते हुए काठुमाण्डू पहुँचे। कुछ समय बागमती तट पर निवास किया। इधर श्रीराम मन्दिर में परिचित संत रहते थे, उनके सहयोग से आगे की यात्रा के लिये आवश्यक कागज तैयार कराये गये तत्पश्चात मुक्तिनाथ के लिए विजय हुए। वाया पोखर से झुमसुम आए। श्री गणेशजी के मन्दिर में आसन लगाया। दो दिन बाद पैदल चलकर मुक्तिनाथ भगवान के दर्शन किए। रात्रिकालीन विश्राम वहीं किया, फिर दामोदर कुण्ड के लिए निकले।

मुक्तिनाथ जी से एक चिलम धारक नागा बाबा संग हो गए। यहीं से दिव्यानंदजी ने एक खच्चर वाला साथ लिया उस पर आवश्यक सामान रख दिया। रात होने पर गुफा आदि स्थानों में विश्राम करते, गर्म मसाला का काढ़ा पीते और जब अधिक ठण्ड लगती तब नागाबाबा चिलम प्रसाद देते उससे शरीर में गर्मी आ जाती थी। दामोदर कुण्ड पहुँच कर आचमन किया। जल में सालिगरामजी खोजे परंतु मिले नहीं। रात को विश्राम करके फिर मानसरोवर की ओर आगे बढ़े। 15 दिन तक नागा बाबा साथ रहे। मस्तान राज्य की सीमा से वे अलग हो गए।

महाराजश्री तथा दिव्यानंदजी तिब्बत राज्य की सीमा पर पहुँचे तब नेपाल से आए खच्चर वाले को पारिश्रमिक भुगतान कर दिया और यहाँ से उसे वापिस भेज दिया गया एवं तिब्बत से पूरे एक महिने के लिए नये खच्चर वाले को साथ लिया। उसने दैनिक सामान खच्चर पर लाद दिया तथा आगे-आगे चलने लगा। 12 दिन यात्रा प्रवास करके आप लोग मानसरोवर पहुँच गए। एक बौद्ध मठ में डेरा डाला। दो-तीन विश्राम पश्चात मानसरोवर तथा कैलाश की परिक्रमा एवं ज्ञानगंज की खोज का अभियान प्रारंभ हुआ। एक खच्चर वाला दैनिक कार्य में आवश्यक सामान को लेकर साथ चलता था। रात होने पर विश्राम करते और प्रातःकाल नित्य नियम उपरांत यात्रा होती। कैलाश मानसरोवर की परिक्रमा करते समय ध्यान अवस्था में महाराजश्री को अनेक अलौकिक अनुभूतियाँ हुई।

इस तरह मानसरोवर व कैलाश परिक्रमा पश्चात ज्ञानगंज की खोज में लगे। खोज करते-करते 14 दिन व्यतीत होने पर अत्यंत परिश्रम, ठण्ड, आक्सीजन की कमी और आहार की अल्पता के कारण दोनों शरीर से ज्वर ग्रस्त हो गए तब पुनः मानसरोवर किनारे स्थित उसी बौद्ध मठ में आए जहाँ पहले डेरा डाला था। सप्ताह भर औषधीय उपचार एवं विश्राम करके प्रवास की असफलता के भाव से दोनों ने वापिस नेपाल होकर भारत आने हेतु प्रस्थान कर लिया। इस वापसी यात्रा में भी आप दोनों तथा एक खच्चर वाला दिन में चलते, रात होने पर विश्राम

करते। तीसरी रात एक छोटे तिब्बती के बाहर गुम्पा (गुफा) में निवास किया।

प्रथम पहर में ठण्ड से बचाव हेतु अग्नि प्रज्जवलित करके धूणे के सहारे कंबल का आसन लगाकर दोनों साधक आपस में यात्रा संबंधित चर्चा कर रहे थे। अचानक एक दिव्य तेजपुंज से युक्त दिगम्बर महात्मा धूणा के पास प्रकट हो गए। उस अलौकिक पुरुष का दर्शन करते ही आप दोनो ने खड़े होकर उनका वन्दन किया। आगन्तुक महामानव महाराजश्री के आसन पर विराजमान हुए। संकेत पाकर आप दोनों दिव्यानंदजी वाले आसन पर बैठ गए तब दिगम्बर महात्मा जी ने स्थिर दृष्टि तथा गंभीर स्वर से शुद्ध हिन्दी में आध्यात्मिक शंकाओं का समाधान प्रारंभ किया। जब महामानव नादयोग, मंत्रयोग, हठयोग, विवेचनयोग, कर्मयोग, ज्ञानयोग, राजयोग, भक्तियोग आदि विविध उपासनात्मक विषयों पर शास्त्रोक्त उपदेश प्रदान कर रहे थे उस समय उनका शरीर पारदर्शी दिख रहा था। एक-एक वाक्य तीनों शरीरों को भेद रहे थे।

जब तक महात्माजी बोल रहे थे तब तक समय अवरोधित था। फिर वे एकदम खड़े हो गए, आप दोनों भी खड़े हुए। वे दिव्य देहधारी महात्मा जी महाराजश्री को इंगित करके बोले- अब पुष्कर जी में जगतपिता से आज्ञा लेकर श्री गोपाल कृष्ण की गोदर्शन लीलाओं का रसास्वादन करने गोकुल चले जाना। 16 माह यमुना तट पर रहिए फिर हरिद्वार होते हुए गंगा तट पर चलते समय ऋषिकेश में एक अवधूत मिलेंगे उसके बाद माँ की गोद में हिमालय निवास के लिए आ जाना वहाँ पर लम्बा सत्संग प्राप्त होगा। तथास्तु कहते हुए उस दिव्य तेजपुंज महापुरुष ने उत्तर की ओर प्रस्थान कर लिया। जहाँ तक अग्नि का प्रकाश था वहाँ तक दर्शन होते रहे। फिर महाराजश्री और दिव्यानंदजी अपने-अपने आसन पर बिना कुछ बोले चुपचाप विराजमान हो गए। मन तथा प्राण शान्त हो गये थे। यात्रा सफल हो हुई। जो उद्देश्य लेकर आए थे वह संपन्न हुआ। वह तीसरी रात शान्त स्थिति में व्यतीत हो गई। प्रातःकाल नित्य नियम पश्चात दिव्यानंदजी बोले- रात की सत्संग के बाद सभी आध्यात्मिक द्वार खुल गए। मानव जन्म की यात्रा पूरी हो गई। अब क्या करना है मार्गदर्शन कीजिए। महाराजजी ने कहा- रात की घटना से मानव जन्म की महायात्रा आरंभ हुई है। नेपाल होकर भारत चलिए। आगे पुनः पूर्ववत प्रवास कार्यक्रम शुरू हुआ।

तिब्बत से नेपाल और वहाँ से गोरखपुर आने में लगभग 18 दिन लग गए। गोरखपुर गीता वाटिका में एक दिन विश्राम किया। दूसरे दिन गीताप्रेस के दर्शन उपरान्त गोरखपीठ पहुँचे। महंत अवधनाथजी को प्रणाम करने गए तब उनकी वाणी से ज्ञात हुआ कि रामजन्म भूमि का ताला खोलाने के लिए रामजानकी रथयात्रा चल रही है। कार्तिक पूर्णिमा को अवधपुरी पहुँचना है। यह सुनकर दिव्यानंदजी ने कहा हम लोग इस यात्रा में चल सकते हैं क्या? महंत जी बोले अवश्य चलना चाहिये। साधु संतों का ही यह कार्य है। उस रात गोरखपीठ में विश्राम करके दूसरे दिन रामजानकी रथयात्रा में सम्मिलित हो गए। देवरिया में आदरणीय अशोक जी सिंघल से परिचय हुआ।

लगभग दो सप्ताह पर्यन्त यात्रा के साथ चलते हुए दीपावली के बाद गोपाष्टमी के दिन (31.10.1984) प्रथम पहर में सूचना मिली कि भारत की प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या हो गई है। इसलिए रामजानकी रथयात्रा आज से रोक दी है। जिसको जहाँ जाना है अपनी व्यवस्था अनुसार जा सकते हैं। इस पर महाराजजी ने कहा कि हमको पुष्करजी जाना है। दिव्यानंदजी ने लखनऊ तक बस फिर अजमेर तक रेल यात्राओ का प्रबंध कर दिया और स्वयं अपने माता-पिता और गुरुदेव के दर्शन हेतु भरे हृदय से विदाई लेकर जन्म भूमि चले गए फिर दोनो कभी

नही मिले। इधर महाराजजी कार्तिक शुक्ल चतुदर्शी को पुष्कर जी पहुंच गए यहा बड़ा भारी मेला लगा था बड़ी कठिनाई से भगवान ब्रह्माजी के दर्शन किए उस समय वहा के महंत जी ने बातचीत मे बताया कि बालोतरा के पास श्री ब्रह्माजी का दूसरा मन्दिर बनाया है, उनकी प्राण प्रतिष्ठा का निमंत्रण श्री ब्रह्माजी भगवान को देने मन्दिर निर्माता ब्रह्मचारी श्री खेतारामजी महाराज आज यहाँ आए हुए हैं और अभी राजपुरोहित धर्मशाला में ठहरे हुए हैं। उनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं है।

यह समाचार सुनकर महाराज श्री राजपुरोहित धर्मशाला पहुँच गए। इधर संत श्री खेतारामजी एक धूणा के पास विराजमान थे। उनका शरीर अस्थिमात्र दिख रहा था। उनको बार-बार खांसी आ रही थी। महाराजश्री निकट गये तो उन्हें थोड़ा दूर आसन लगाकर बैठने का अनुरोध किया गया गया, इस पर आपश्री वहाँ बैठ गए। संत खेतारामजी महाराज ने आपको भी प्राण-प्रतिष्ठा मे पधारने का निमंत्रण दिया परंतु आपने कहा कि हम कल ही गोकुल वृन्दावन जा रहे हैं, जब पुनः राजस्थान आयेंगे तब अवश्य दर्शन लाभ प्राप्त करेंगे। उनके साथ नापजप, साधना, श्वास, ध्यान तथा स्वास्थ्य संबंधित चर्चा हुई। तत्पश्चात उनसे विदाई लेकर रात्रिकालीन विश्राम परशुराम द्वारा में किया।

दूसरे दिन ब्रह्म सरोवर में स्नान करके गोकुल वृन्दावन के लिए प्रस्थान कर दिया। पुष्कर से अजमेर तक बस में आये और अजमेर से आगे रात की रेल द्वारा दूसरे दिन मथुरा रेलवे स्टेशन पहुँच गये तथा मथुरा रेल से उतर कर एक तिपहिया वाहन से मध्याह्न के समय श्री गोकुल पहुँच गए। यहाँ पर तीर्थ पुरोहितों के समूह ने महाराज जी को घेर लिया। उसमें से एक पुरोहित ने कहा है कि कृष शरीर वाला युवक साधु का चेहरा अत्यंत तेजस्वी है, इनको बैठक में लेकर चलो। तीर्थ पुरोहितों के अनुरोध पर महाराज जी उनके साथ यमुना तट पर बैठक भवन आए। तीर्थ पुरोहितों के पूछने पर आपने गोकुल से बाहर यमुना तट पर एकांत में निवास करने का भाव प्रकट किया। इसके बाद दो पुरोहितों ने साथ लेकर पहले नंदटीला व गोकुलनाथजी के दर्शन कराए तथा बाद में श्रीगोकुल नगरी से बाहर चौगान गढ नामक स्थान पर पहुँचाने आए।

यह जगह अत्यंत रमणीक और एकांतिक थी। यहाँ पर आते ही अचानक श्री गोपाल कृष्ण की गोपालन लीलाओं के दिव्य दर्शन होने लगे। महाराजश्री मूर्छित होकर गिर गए। घंटो पश्चात मूर्छा टूटी परंतु अर्द्धनिंद्रा जैसी अवस्था बन गई जिसमें वाणी बंध गई। साथ में आए हुए लोगों ने उन महाराजजी को संभाल कर वहाँ बने एक कक्ष में आसन लगाकर लेटा दिया। ऐसी अवस्था में ही अपरान्ह स्नान कराया, रात को थोड़ा गोदुग्ध पान करने को दिया। बाद में वहीं सुलाया परंतु नींद नहीं आई। दो व्यक्ति वहीं पर पास में सो गए। प्रातःकाल हाथ पकड़कर यमुना में स्नान करवाया। तीन दिन तक अपने आप कुछ नहीं करते थे। सभी क्रियाओं सहयोगी लोग करवाते थे।

चौथे दिन महाराजश्री ने अपने आप यमुना स्नान किया। संध्या, गीतापाठ, शिवजी का जलाभिषेक आदि अर्द्धनिंद्रा में धीरे-धीरे करने लगे। ऐसी दिनचर्या नित्य की बन गई। उस समय महाराजजी को अंतरंग में एक गोप किशोर सखा के रूप मिल गया। इसलिए जगत का भान भूल गए। अपने सखा के साथ गोचारण लीलाओं के अनुकरण में मग्न रहने लगे और अपना नित्य नियम अर्द्ध चेतन अवस्था में करते जाते किसी से कुछ बातचीत नहीं होती थी फिर भी सभी नित्य नियम हो रहे थे।

गोकुल वासियों का विश्वास है कि चौगान गढ श्री बालकृष्ण भगवान की क्रिड़ा स्थली है। यह पावन स्थल वर्तमान श्री ....लगातार अगले अंक में

माँ

(परम् श्रद्धेय स्वामी श्री रामसुखदासजी महाराज)

...........पिछले अंक से आगे

माँ का बल है, बुद्धि है, योग्यता है, विद्या है, शरीर है, कपड़े हैं, घर आदि सब कुछ बच्चों के लिए ही होता है। ऐसे ही भगवान के पास जो कुछ सामर्थ्य है, शक्ति है विलक्षणता है वह सब केवल हमारे लिए ही है। अगर हमारे लिए नहीं है तो किसके लिए है? इस वास्ते हमें कभी किसी भी बात की चिंता नहीं करनी चाहिए। कभी चिंता हो भी जाए तो भगवान से कह दो- हे नाथ देखो यह चिंता आ गई। जैसे बालक को प्यास लगती है वह भूभू करता है तो माँ पानी पिला देती है। अब किसी भी कोष में भू नाम पानी का नहीं आया है। भू कहते ही माँ पानी पिला देती है। ऐसे ही हम किसी भी भाषा में कुछ भी कहते हैं तो उसकी माँ अर्थात भगवान समझ जाते हैं।

गूंगा तेरी बात को और न समझे कोय।
के समझे तेरी मावड़ी के समझे तेरी जय।।

जैसे गूंगे की भाषा उसकी माँ समझे या लुगाई समझे और कौन समझे उसकी भाषा को, परंतु हमारी भाषा को भगवान समझे कि नहीं समझे इससे भी हमें मतलब नहीं रखना है। अपने तो माँ-माँ करते जाओ बस, जैसे बालक माँ को किसी विधि से थोड़े ही याद करता है? वह तो बस माँ-माँ करता रहता है। ऐसे ही माँ-माँ करते रहो बस और हमें कुछ करना ही नहीं है। माँ प्रिय लगती है, माँ का नाम अच्छा लगता है इस वास्ते प्यार से कहो माँ-माँ-माँ।

हमें एक सज्जन मिले थे, वे कहते थे कि हम कभी माला फेरते हैं तो क्या करते हैं कि जैसे जीमने में अर्थात भोजन करने में आनंद आता है तो सबरका लेते हैं, ऐसे ही माला फेरते हैं तो सबरका लेते हैं। अब भजन की क्या विधि है? अपने को सबरका लेना है। बस मौज से नाम उच्चारण करें, कीर्तन करें कुछ भी करें तो मस्त होकर करें। क्या होगा, कैसे होगा, इन बातों से अपना कोई मतलब ही नहीं है। इन बातों से मतलब माँ को है और इन बातों की माँ को ही बड़ी चिंता होती है। जैसे माता यशोदा और माता कौशल्या को चिंता होती है कि मेरे लाला का ब्याह कब होगा? पर लाला तो समझता ही नहीं की ब्याह क्या होता है? क्या नहीं होता है? वह तो अपनी मस्ती में खेलता ही रहता है।

ऐसे ही हमारी माँ को चिंता होती है कि बच्चे का कैसे होगा, क्या होगा, पर हमें तो इससे कोई मतलब नहीं है और इसको जानने की जरूरत भी नहीं है। माँ जाने माँ का काम जाने। अपने तो आनंद ही आनंद में रहना है और माँ की गोद में रहना है। हमारे में और बालक में फर्क इतना ही है कि हम रोते नहीं बालक तो भोलेपन से, मूर्खता से रोता है, पर हमारी तो माँ है हम रोवे क्यों? हम तो केवल हंसते रहें मस्ती से माँ की गोदी में पड़े रहें। कैसी मौज की बात है कितने आनंद की बात है। तू जाने तेरा काम जाने ऐसा कहकर निश्चिन्त हो जाओ, निर्भय हो जाओं, नि:शोक हो जाओ और निशंक हो जाओ।

हमें तो आनंद ही आनंद में रहना है हरदम, मस्ती में रहना है। अपना तो कुछ काम है ही नहीं सिवाय मस्ती के, सिवाय आनंद के। हमारी जिम्मेदारी तो एक ही है कि हरदम मस्त रहना, आनंद में रहना। माँ-माँ नाम लेना अच्छा लगता है। माँ का नाम हमें प्यारा लगता है इस वास्ते लेते हैं। राम नाम मीठा लगता है इस वास्ते लेते हैं। इसमें कोई विधि थोड़े ही है कि इतना नाम लो। इतना-उतना क्या हम अपनी मर्जी से माँ-माँ करते रहें। किस तरह करना है, कितना करना है, कैसा भजन किया, कितना भजन किया इससे हमें क्या मतलब है, हमें माँ का नाम प्यारा लगता है इस वास्ते खुशी से, प्रसन्नता से लेते हैं। बस अपने तो मौज हो रही है, आनंद हो रहा है। मुख राम-कृष्ण, राम-कृष्ण कीजिये रे! सीताराम ने भजे ने लावों लीजिये रे! राम, राम, राम!

श्रीमद् भागवत कथा

(पू. मलूकपीठाधीश्वर महंत श्री राजेन्द्रदासजी महाराज)

पिछले अंक से आगे.....

हमको लगता है हम साधु नहीं सच्चे साधु ये हैं जिनमें ऐसी श्रद्धा संत वेश के प्रति है? दूसरी बात वहाँ संग्रह का सर्वोत्तम सदुपयोग हो जाता है। साल भर में जो कपड़ा बांटने से बच गया, बर्तन बच गया, कंबल बचे जो भी तुम्हारे पास संग्रह है ले जाओ और बाहर से लाकर तो लूटाओ सो लुटाओ, जो 2 साल, 3 साल में जाने अनजाने में इकट्ठा हो गया हो उस सबको लुटाकर के लंगोटी झाड़ के चले आओ। इससे तो यह लगता है कि यह संग्रह का भी सदुपयोग है। वहाँ जाने के बाद आपका संग्रह सेवा के कार्य में लग गया तो उस संग्रह के त्याग की बहुत बड़ी महिमा है।

तो नंद बाबा बोले कि भाई अब तक मैंने जीवन में मांगा नहीं है, पर लाला के लिए में मांग सकता हूँ,पर हे गुरुजी ! कुछ जोर आप लगाइए और कुछ मैं लगाऊंगा और दोनों गुरु-चेला मिलजुल कर काम सिद्ध करके आएंगे। बिल्कुल ठीक है शांडिल्यजी ने कहा। शांडिल्यजी और नंद बाबा दोनों वृषभानु बाबा के यहाँ पधारे हैं। बृजभान बाबा ने अगवानी की है। शांडिल्य महर्षि के चरणों में प्रणाम किया है, नंद बाबा को हृदय से लगाया है। आओ बृजराज नंद राय जी आप भले पधारे। कैसे पधारना हुआ, कोई प्रयोजन है क्या? बाबा ने कहा आपसे मिले बहुत दिन हो गये, आपसे मिलने की इच्छा उत्पन्न हो गई और मन में आया कि लाली को देखे भी बहुत दिन हो गए तो लाली के भी दर्शन कर आयेंगे। अरे, यह खेल रही है यही तो लाली है। अच्छा जी लाली के दर्शन तो हो गये।

वृषभानुजी बोले- नंद बाबाजी, बाकी घर में सब कुशल मंगल है? नंद बाबा बोले आप जैसे बड़ों के होते हुए हम पर कहाँ कमी है। सब काम बहुत बढ़िया है, कोई बात की कमी नहीं है। तो दर्शन तो है गए और कोई बात हो तो बताओ। बोले हाँ दर्शन हो गए, अब गुरु-चेला एक दूसरे की तरफ देखे लेकिन किसी की कम्बल मांगने की हिम्मत नहीं हो रही। आपस में एक दूसरे की तरफ इशारा करे कि आप बोलो, आप बोलो। वृषभानुजी समझ गये कि बात तो कुछ है मगर कह नहीं पा रहे हैं, संकोच कर रहे हैं। वृषभानुजी बोले- क्या बात है, आप कुछ संकोच कर रहे हो? बहुत ऊँची बात है कि अपनों से कभी संकोच नहीं होता, संकोच पराये से होता है। वृषभानुजी बोले- लगता है कि आप हमको अपना नहीं मानते हैं। यदि आप हमें अपना मानते तो संकोच किस बात का? अपने संकोच होता है क्या? क्या माँ से कुछ मांगने में बालक को संकोच होता है क्या? अपनी मानता है तो मैया से सब कुछ कह देता है, पिता से भले ही संकोच करता हो बालक।

वृषभानुजी बोले, नंद राय जी हमारी शपथ है तुम संकोच मत करो, जो बात है वो बता दो। तब बाबा ने कहा आज गोपाष्टमी है गुरु जी ने मुहूर्त बताया है लाला आज गोचारण करने जायेगा। हाँ हम भी चलेंगे, लाला को आशीर्वाद देंगे, पर आप यहाँ पधारे उसका प्रयोजन बताओ। बात यह है वृषभानुजी कि लाडली राधा के पालने में जो कमरिया बिछी हुई है वह कमरिया ओढ़ के लाला गैया चराने जाएगा तो उसे नजर नहीं लगेगी, कोई उस पर टोना-टोटका नहीं कर पायेगा ऐसा गुरुदेव ने कहा है, इसलिये हम दोनों आपके पास वो कमरिया लेने आये हैं। असली बात तो यह है।

बृजभान जी बोले वह तो बाबा पुरानी हो गई है, नई सी बढ़िया से बढ़िया कमरिया ला देते हैं। बाबा बोले- राधा रानी की प्रसादी है यही चाहिये। वृषभानुजी बोले- नई कमरिया पर राधा रानी को

बिठा देते हैं, फिर वो दे देते हैं। बाबा बोले नहीं इसी का अधिक उपयोग किया है तो जन्म के समय वह कमरिया आई थी और राधा रानी भी 6 वर्ष की हो गई है तो 6 वर्ष तक लगातार उस कामरिया का व्यवहार किया गया है। इसलिये हमको यही पुरानी कामरिया दे दो। लाला भी 6 साल के और राधा रानी भी 6 साल की है।

नंद बाबा को वो कामरी प्रदान की गई। वो कामरी ठाकुरजी ने ओढ़ी है। इसलिये हमारे ब्रज में गाते हैं –

जुलम कर डारो री,
आ काली कँवर वारे ने,
जुलम कर डारो री,
आ काली कँवर वारे ने,
आ कारी कँवर वारे ने
आ धोरी धूमर वारे ने
जुलम कर डारो री,
आ काली कँवर वारे ने,

मथुरा में अने जन्म लियो है,
मथुरा में अने जन्म लियो है,
गोकुल में बजे नगाड़े रे
आ काली कँवर वारे ने,
काली कँवर वारे ने,
धोली धूमर वारे ने,
जुलम कर डारो री,
आ काली कँवर वारे ने.......

मोह लियो मन हँस हँस इसने,
पकड़ पकड़ कर ताने चुनरिया,
नैनो से जादू डारो रे,
आ काली कँवर वारे ने,
काली कँवर वारे ने,
धोली धूमर वारे ने,
जुलम कर डारो री,
आ काली कँवर वारे ने.......

जमुना तट ओ रास रचावे,
मुरली की ओ तान सुनावे,
भक्तन को आन उबारो रे,
आ कारी कँवर वारे ने,
धोली धूमर वारे ने,
जुलम कर डारो री,
आ काली कँवर वारे ने.......

निंदिया ना ओ श्याम बिन आती,
ओ राधा ललिता भेजत पाती,
उद्धव ने दियो सहारो रे,
आ काली कँवर वारे ने,
काली कँवर वारे ने,
धोली धूमर वारे ने,
जुलम कर डारो री,
आ काली कँवर वारे ने.......

गोकुल में धूम मचावे रे,
संग राधा रास रचावे रे,
छोटो सो पवन को थारो रे,
जा काली कँवर वारे ने,
काली कँवर वारे ने,
धोली धूमर वारे ने,
जुलम कर डारो री,
आ काली कँवर वारे ने.......

ठाकुर जी ने कारी कामरिया ओठी है। ब्रजराज श्री नंदबाबा के घर आज बहुत ही शुभ घड़ी आई है। लाला के गैया चराने जाने का मुहुर्त देखा जा रहा है।

ओरु सुनि सम्मति पशुपाल मुद,
द्विजमत शुभ दिन आज।
सिंह पौर ब्रजराज के,
बाजी नौबत गाज।।

और (सब ओर) यह सम्मति (राय) सुनी जा रही है।

पशुपालकों (ग्वालों/गोपों) में हर्ष व्याप्त है। ब्राह्मणों (द्विजों) का भी यही मत है कि आज का दिन अत्यंत शुभ और मंगलकारी है। ब्रजराज (नन्द बाबा या श्री कृष्ण) के महल के मुख्य द्वार (सिंह पौर) पर नौबत (राजसी नगाड़े) बड़ी गर्जना (गाज) के साथ बजने लगी हैं।

नंद महल के सिंह पौर पर नफीरी, शहनाई और नगाड़ा बजने लग गये है। यह जो शहनाई है ना यह कोई मंगल अवसर होता है तो बजाई जाती है। शहनाई बजने लग गई है। घर-घर में ग्वाल सजने लगे है। यशोदा-रोहिणी ने बलराम-कृष्ण को सनान कराया है। उबटन लगाया है। कछनी काछी है (धोती बांधी है)। पीत पिछौरी बांधी है। यशोदा जी ने श्रृंगार किया है पितांबर की फटकार काछी है। मोर पंख का मुकुट और रत्नों की कलंगी धारण कराई है। मकराकृत कुंडल धारण कराए हैं और दृष्टि मोहन तिलक पधारायो है ललाट पर और दर्पण दिखाई के लाला को कहा- देख लाला तू कैसा लग रहयो है और बजावे की श्रृंगी दी है, तीन बांसुरी दी है, गेंद खेलवा की दी है और लीला कमल दिया मैया ने और पशु वशीकरा एक गोरक्षक दिया है। डंडे को गोरक्षक कहते हैं। ग्वारिया जो हाथ में डंडा लेता है, उसे लाठी या डण्डा नहीं कहते हैं, उसको क्या कहते ह?ैं उसका नाम है गोरक्षक। हमारे पूज्य पथमेड़ा महाराज जी हाथ में एक लाकुट रखते हैं। वे कभी उसको लाठी या लकुटी आदि नहीं बोलते हैं। महाराज जी उसे हमेशा गोरक्षक बोलते हैं।

तो मैया ने लाला को एक गोरक्षक हाथ में दिया है और बीणा भी दी है, तरंगिणी नाम की बीणा दी है और विलास कर्षण नाम की सींगीनी दी है और धनुष बाण भी दिया है और सौरव यश नाम का एक पंखा भी दिया है। ये सब लेकर सखा साथ गये हैं। सुन्दर डिठोना (वह काला टीका या काजल की बिंदी जो छोटे बच्चों को बुरी नजर से बचाने के लिए उनके माथे, गाल या कान के पीछे लगाई जाती है) लगाया है। नरसिंह मंत्र उच्चारण किया है शांडिल्य महर्षि ने और श्री ठाकुर जी के कलाई में रक्षासूत्र बांधा है। ब्राह्मणों ने स्वस्तिवाचन किया है (स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवा:। स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदा:। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमि:। स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु। अर्थः महान कीर्ति वाले इन्द्र, विश्व के ज्ञाता पूषादेव, दुखों का नाश करने वाले गरुड़ और बुद्धि के स्वामी बृहस्पति हमारा कल्याण करें।) बाबा ने ब्राह्मणों को गोदान करवाया है। बंदीजनों ने यश गाया है। विरद उच्चारण (यश और कीर्ति गान) किया है। दही, दुर्वा लाजा (धान से बनी खीलें) अक्षत आदि बरसाए जा रहे हैं। पुष्पों की वर्षा हो रही है।

ठाकुर जी ने बाबा के चरणों में प्रणाम किया, मैया के चरणों में प्रणाम किया, बड़ी-बड़ी माताओं के चरणों में प्रणाम किया, बड़े गोपन के चरणों में प्रणाम किया, अपने से छोटे बालकों को आशीर्वाद दिया, अपने बराबरी के बालकों को कंठ से, हृदय से लगाया और सब आशीष दे रहे हैं कि करोड़-करोड़ वर्ष तक लाल तेरी उम्र है। रोहिणी ने सुंदर भोजन कराया है। सखाओं के साथ बिताया है और इसके बाद भोजन कराकर तिलक करके बोले अब गोचारण का समय आ गया है।

अब सखाओं की मंडली में भगवान को एक नरम सखा साथ किया है। नरम सखा, नरम शब्द का अर्थ संस्कृत में होता हास्य-परिहास। उसकी सेवा मिली है मुद मंगल जी को। ठाकुर जी खिलखिलाकर हंसे यह की सेवा है मुद मंगल जी की। आजकल नाटक वगैरा में मुद मंगल जी को ऐसा बावरा आप पागल जैसा बना देते हैं। आजकल टीवी वगैरह पर आता है न, एक हाथ से विकलांग बना देते हैं, यह ठीक नहीं है भगवान के पात्रों के साथ इस प्रकार खिलवाड़ करना। मुद मंगल कौन हैं, जानते हैं आप? मुद मंगल एक महान ऋषि हैं....शेष अगले अंक में

गौ–महिमा सूक्त (पैप्पलाद संहिता)

नमस्ते जायमानायै जाताया उत ते नमः।
वालेभ्यः शफेभ्यो रूपायाघ्न्या ते नमः।।

जन्म लेती हुई और जन्म ले चुकी गौ माता को नमस्कार है। आपके बालों (पूँछ के केशों), खुरों और आपके सुंदर अवध्य रूप को हमारा नमस्कार है।

नमस्ते शृङ्गाभ्यां चक्षुष्भ्यां ते नमो अस्तु नः।
नमस्ते कर्णाभ्यां मुखायै ते नमो अस्तु नः।।

आपके दोनों सींगों और आँखों को नमस्कार है। आपके दोनों कानों और मुख को हमारा नमस्कार है।

नमस्ते ग्रीवाभ्यः पृष्ठीभ्यस्ते नमो अस्तु नः।
नमस्ते पार्श्वभ्यां सक्थिभ्यां ते नमो अस्तु नः।।

आपकी गर्दन और पीठ को नमस्कार है। आपकी दोनों पसलियों और जंघाओं को नमस्कार है।

नमस्ते ऊधसे स्तनाभ्यां ते नमो अस्तु नः।
नमस्ते पुच्छाय वालधिभ्यस्ते नमो अस्तु नः।।

आपके दुग्ध–पात्र (ऊधस) और थनों को नमस्कार है। आपकी पूँछ और पूँछ के आधार भाग को नमस्कार है।

नमस्ते प्रपदाभ्यां कुष्ठाभ्यां ते नमो अस्तु नः।
नमस्ते गुल्फाम्यां जंघाभ्यां ते नमो अस्तु नः।।

आपके पैरों के अग्रभाग और खुरों के मध्य भाग को नमस्कार है। आपके टखनों और जंघा–नली को नमस्कार है।

नमस्ते अस्थिभ्यो मज्जभ्यस्ते नमो अस्तु नः।
नमस्ते मांसभ्यो लोहितेभ्यस्ते नमो अस्तु नः।।

आपकी अस्थियों (हड्डियों) और मज्जा को नमस्कार है। आपके मांस और रक्त (जो आपकी जीवन शक्ति है) को नमस्कार है।

नमस्ते अन्त्रेभ्यः कुक्षिभ्यां ते नमो अस्तु नः।
नमस्ते यक्ने वृक्कभ्यां ते नमो अस्तु नः।।

आपकी आँतों और कोख को नमस्कार है। आपके यकृत (लीवर) और वृक्क (गुर्दो)को नमस्कार है।

नमस्ते ह्रदयाय मतस्नाभ्यां ते नमो अस्तु नः।
नमस्ते क्लोम्ने पुरीतते ते नमो अस्तु नः।।

आपके ह्रदय और फेफड़ों को नमस्कार है। आपके पित्ताशय और ह्रदय–आवरण को नमस्कार है।

नमस्ते यद् ध्रिष्णो यत् क्रूरं ते नमो अस्तु नः।
नमस्ते या ओषधयस्ते नमो अस्तु नः।।

आपके भीतर जो तेज और जो उग्रता (रक्षा के लिए) है, उसे नमस्कार है। आपके माध्यम से प्राप्त होने वाली औषधियों को नमस्कार है।

नमस्ते सर्वाभ्यः सुभगाभ्यस्ते नमो अस्तु नः।

हे सौभाग्य प्रदान करने वाली गौ माता! आपके सभी रूपों और शक्तियों को हमारा बारंबार नमस्कार है।

वाल्मीकि रामायण में गोमहिमा

एतदेव हि मे रत्नमेतदेव हि मे धनम्।
एतदेव हि सर्वस्वं एतदेव हि जीवितम्।।

यही (गाय) मेरा रत्न है, यही मेरा धन है, यही मेरा सब कुछ है और यही मेरा जीवन है।

अदोमूलाः क्रियास्सर्वा मम राजन्न संशयः।

हे राजन्! मेरी समस्त (धार्मिक) क्रियाएं इसी (गाय) के मूल पर आधारित हैं, इसमें कोई संशय नहीं है।

नाहं शतसहस्रेण नापि कोटिशतैर्गवाम् राजन्!
दास्यामि शबलां राशिभी रजतस्य च।।

हे राजन्! मैं लाखों–करोड़ों गायों या चांदी के ढेरों के बदले भी **शबला** (महर्षि वशिष्ठ की कामधेनु गोमाता का नाम)को नहीं दूँगा।

श्री राम कथा

पू. आचार्य श्री दयानंद शास्त्री जी महाराज

पिछले अंक से आगे........

तो बाबा तुलसी ने कहा- यह कथा मैंने किन्हीं और के लिए नहीं लिखा। **'स्वांतः सुखाय'** उन्होंने अपनी आत्मा के सुख के लिये इसकी रचना की। मुझे आत्म सुख मिल रहा है इसकी रचना में, इसके मनन, चिंतन, गायन में। मैं स्वयं सुखी हो रहा हूँ। बाबा ने अपने आत्म सुख के लिए रचा है-

स्वान्तःसुखाय तुलसी रघुनाथगाथा
भाषानिबन्धमतिमंजुलमातनोति।।

यह सरल भाषा में, अवधि भाषा में जो रचित मानस गाथा है यह अपने मन को सुनने के लिए है। वास्तव में हम सबको सुनाते हैं आज सच्ची बात- मेरा मन बेईमान सुन नहीं रहा है। यह कहाँ-कहाँ घूम आया इतनी देर में पता नहीं। मंच पर बैठे हम हैं पर मेरा मन बिना मोटर के दौड़ रहा है। श्रोता मन बन जाए इससे बड़ी और बढ़िया कथा और क्या होगी? अपने मन को श्रोता बना सकें कभी तो हमारा व्यक्तित्व सफल हो जाए, वाचकता सफल हो जाए। व्यक्तित्व का पूर्ण लाभ तब होगा जब मेरा मन भी श्रोता बनकर बैठ जाए।

तो तुलसी बाबा ने हमको किसी को श्रोता ना बनाकर अपने मन को श्रोता बनाया है, इसे हम प्रत्येक गाथा में उत्तरोत्तर चर्चा में लायेंगे। बाबा तुलसी ने विनय पत्रिका में अपने मन से कहा-

मन पछितैहै अवसर बीते।
दुर्लभ देह पाइ हरिपद भजु, करम, बचन अरु हीते।।
सहसबाहु, दसबदन आदि नप बचे न काल बलीते।
हम हम करि धन-धाम सँवारे, अंत चले उठि रीते।।
सुत-बनितादि जानि स्वारथरत न करु नेह सबहीते।
अंतहु तोहिं तजेंगे पामर! तू न तजै अबहीते।।
अब नाथहिं अनुरागु जागु जड़, त्यागु दुरासा जीते।
बुझै न काम-अगिनि तुलसी कहुँ, बिषयभोग बहु घी ते।।

हे मन! अवसर बीत जाने पर तुझे पछताना पड़ेगा। यह मनुष्य शरीर बहुत दुर्लभ है (बड़ी मुश्किल से मिलता है), इसे पाकर मन, वचन और कर्म से भगवान के चरणों की भक्ति कर। सहस्रबाहु और रावण जैसे शक्तिशाली राजा भी बलवान काल (मृत्यु) से नहीं बच सके। जिन लोगों ने 'मेरा-मेरा' करके धन और महल बटोरे, अंत में वे भी खाली हाथ (रीते) ही चले गए। पुत्र, स्त्री आदि सभी को स्वार्थ में लीन समझ, इनसे बहुत मोह मत कर। हे मूर्ख (पामर)! अंत समय में ये सब तुझे छोड़ देंगे, तो तू इन्हें अभी से क्यों नहीं छोड़ देता (अर्थात इनका मोह त्याग कर भगवान में मन लगा)। हे जड़ बुद्धि! अब भी जाग जा और परमात्मा से प्रेम कर, अपनी बुरी आशाओं को त्याग दे। तुलसीदास जी कहते हैं कि विषयों को भोगने से कामनाओं की अग्नि कभी शांत नहीं होती, बल्कि यह वैसे ही बढ़ती है जैसे घी डालने से आग और धधकती है।

वचन और हृदय से भगवान का भजन करो नहीं तो अंत में पछताओगे, पछताओगे और पछताओगे। अपने मन को संभाल ले। देखो दुनिया की चका चौंध ने किसी को भी छोड़ा नहीं। यहाँ लोग फंसते जा रहे हैं फंसते रहे हैं और फंसने जा रहे हैं, पर जो फंस चुके पूर्व में उनकी हालिया (जानकारी) तो लो कि वे कैसे ठौर पर है? कहा- *'सहसबाहु, दसबदन आदि राजा बचे न काल बलीते। हम हम करि धन-धाम सँवारे, अंत चले उठि रीते'* यही तो खास बात रही। सहसबाहू एक राजा हुआ जिसका नाम सहस्त्रबाहु था, हजार हाथ वाला। हम लोग दो हाथों की कमाई से अंदाजा लगा सकते हैं कि कितना कमा लिया है जिसके पास हजार हाथ होंगे वह कितना कमाया होगा? 10 बदन, 10 बदन नाम रावण का है। हमारी एक माथे की

सोच है तो पूरे देश नहीं विश्व में अपने एक हल्का मच रहा है, पर जिसके 10-10 माथे होंगे वह कितना सोचता होगा? एक माथे की सोच से दुनिया मुठ्ठी में आ गई आज तो जो 10 माथों से सोचता होगा, 20 हाथों से कमाता और लूटता होगा उसकी कमाई और सोच कहाँ तक गए होंगे? हजार हाथों की कमाई, 10 माथे की सोच से धन और धाम को संवारा, लेकिन अंत चले सहस्रबाहु और रावण अंत में खाली हाथ ही गये। सहस्रबाहु ने हजार मुट्ठी खोलकर दिखाए कि देखो भाई मुट्ठी हजार थी, पर खाली है, रावण ने 20 मुट्ठी खोल कर दिखाई कि मुठियाँ 20 थी पर खाली है। इसलिए दो मुट्ठी वाला भी तो खाली ही जाएगा। तो क्यों धोखा खाएं? बोलो भक्तवत्सल भगवान की जय!

मन पछितैहैं अवसर बीते।
दुर्लभ देह पाइ हरिपद भजु, करम बचन अरु हीते।
सहसबाहू दस-बदन आदि नृप, बचे न काल-बलीते।
हम-हम करि धन-धाम सँवारे, अंत चले उठी रीते।
सुत-बनितादि जानि स्वारथरत, न करु नेह सबहीते।
अंतहु तोहिं तजेंगे पामर ! तू न तजै अबहीते।

तुलसीदास जी कहते हैं कि हे मन! जब यह मनुष्य जन्म का अवसर बीत जाएगा, तब पछताने से कुछ नहीं होगा। यह शरीर अत्यंत दुर्लभ है, इसलिए मन, वचन और कर्म से ईश्वर (हरिपद) की भक्ति में लग जाओ। सहस्रबाहु और रावण (दस-बदन) जैसे शक्तिशाली राजा भी काल के प्रहार से नहीं बच सके। वे भी मैं-मैं (अहंकार) करते हुए महल और धन बटोरते रहे, लेकिन अंत में खाली हाथ (उठी रीते/उजड़िते) ही चले गए। परिवार (पुत्र, पत्नी आदि) अंततः अपने स्वार्थ में लगे हैं। मृत्यु के समय ये सब तुम्हें छोड़ देंगे। तो हे मूर्ख (पामर)! तू अभी से इनका मोह क्यों नहीं छोड़ देता, जबकि वे तुझे अंत में छोड़ने ही वाले हैं? इसलिये आए हुए अवसर को मत जाने देना।

हरि भक्तों! नाम वंदना की ओर जाने से पहले हम गुरु वंदना कर लेते हैं। वाह! वाह! तुलसी! आप तो वंदना के आचार्य हैं। मध्यकालीन और आधुनिक काल में बाबा तुलसी के सामान कोई वंदना का आचार्य नहीं हुआ। वंदना मानो उनकी वाणी, उनकी विनय का श्रृंगार हो। तो गणपति आदि की सोरठा में वंदन करते हुए सीधे पंक्ति पर आते हैं।

जो सुमिरत सिधि होइ गन नायक करिबर बदन।
करउ अनुग्रह सोइ बुद्धि रासि सुभ गुन सदन।।

जिन्हें स्मरण करने से सब कार्य सिद्ध होते हैं, जो गणों के स्वामी और सुंदर हाथी के मुख वाले हैं, वे ही बुद्धि के राशि और शुभ गुणों के धाम (श्री गणेशजी) मुझ पर कृपा करें।

'व्यास सुमास सुमद अनुमाने' व्यास विधि, सुमास विधि दोनों ही कथा के रूप है। दोनों में जो अवसर हमें मिलेगा, उसी में हम अपने आप को संतुष्ट कर लेंगे।

बंदउँ गुरु पद कंज कृपा सिंधु नररूप हरि।
महामोह तम पुंज जासु बचन रबि कर निकर।।

मैं उन गुरु महाराज के चरणकमल की वंदना करता हूँ, जो कृपा के समुद्र और नर रूप में श्री हरि ही हैं और जिनके वचन महामोह रूपी घने अन्धकार का नाश करने के लिए सूर्य किरणों के समूह हैं।

बंदऊँ गुरु पद पदुम परागा।
सुरुचि सुबास सरस अनुरागा।
अमिअ मूरिमय चूरन चारू।
समन सकल भव रुज परिवारू।।

मैं गुरु महाराज के चरण कमलों की रज की वन्दना करता हूँ, जो सुरुचि (सुंदर स्वाद), सुगंध तथा अनुराग रूपी रस से पूर्ण है। वह अमर मूल (संजीवनी जड़ी) का सुंदर चूर्ण है, जो सम्पूर्ण भव रोगों के परिवार को नाश करने वाला है।

बहुत ही सूक्ष्मता से समझने के पद है। **'बंदऊँ गुरु पद पदुम परागा'** हम गुरुदेव भगवान

पदों की वंदना नहीं करते हैं, फिर किसकी करते हैं? कहा पदम परागा- गुरुदेव भगवान के चरण कमल के पराग की वंदना करते हैं। भगवान गुरुदेव के चरण कमल है और उन कमल में जो पराग है अर्थात संत चरणों की धूली की हम वंदना करते हैं। यह तारन तरण की योग्यता चरण की धूली में है। गुरु के चरण यदि कमल हैं तो पराग क्या होगा? तो चरणों की धूल ही पराग होगा। **'बंदऊँ गुरु पद पदुम परागा'** इसलिए गुरुदेव भगवान के चरणों की धूल कि मैं वंदना करता हूँ।

इस धूली की वंदना से क्या मिलने वाला है? भागवतकार कहते हैं कि महापुरुषों के चरण रज से जो अपना अभिषेक करते हैं वे जीव कृतकृत्य हो जाते हैं। महापुरुषों की चरण धूली से नहा लेना चाहिये। इससे जीव का रोम-रोम कृतकृत्य हो जाता है। इसलिए चरण रज की वंदना करते हैं। रज से होता क्या है? क्योंकि मानस में प्रवेश करना है हम सबको तो हमको मानस में प्रवेश करने के लिए क्या-क्या चाहिए, अपने को उन साधनों का चिंतन है। **'सुरुचि सुबास सरस अनुरागा'** पहले तो सुंदर रुचि जगे, बिना रुचि के रामायण कैसे सुनेंगे हम लोग। रुचि जगाने की आवश्यकता है कि नहीं? वह रुचि तब जगेगी जब हम लोग गुरुदेव के चरणों की रज का आश्रय ग्रहण करेंगे। ये पराग हमारे अंतःकरण में सुरुचि उत्पन्न करेंगे, लालसा को प्रकट करेंगे। लालसावान होंगे, सुरुचि पैदा हो, सुरुचि जन्म ले और हम भगवान के भक्त बनने के लिए आतुर हो जाएं।

फिर कहा 'सुबास'। सुबास माने सुगंधी। इन चरणों के आश्रित जीवों का जीवन सुगंधित होता है। सुगंधी किसको कहते हैं? जिनको हम लोग लौकिक सुख कहते हैं। संसार में जीने के लिए साधनों की आवश्यकता होती है। हमारे घर में अगर अनुकूलता ना हो, लोक साधनों का अभाव हो तो कहाँ हम रुचि रखकर भी भक्ति में मन लगा पाएंगे। सुंदर रुचि तो भक्ति की और साथ में गृहस्थी की अनुकूलता प्राप्त हो जाए तो उसको 'सुबास' कहते हैं। भगवान शिव की आराधना में सुगंधिम पुष्टिवर्धनम् गाते हैं। वहाँ सुगंधी क्या अर्थ हुआ? भगवान शिव की आराधना करने वाले जीव, आराधना करने से सुगंधी को प्राप्त करते हैं तो उनको कोई सेंट का डिब्बा नहीं मिलता है। सुगंधी कहते हैं जीवन में भोगों की अनुकूलता। सुगंधी कहते हैं जीवन में भोगों की अनुकूलता जिससे हम लौकिक सुख को पा सकें। इसलिए सुंदर रुचि भगवान के भक्ति के प्रति और 'सुबास' लौकिक अनुकूलता जिससे भोगों के बल पर हम मचलते-मचलते भक्ति करने में रम सकें वह सुबास प्राप्त होगा।

फिर कहा 'सरस अनुरागा'। अनुराग भगवान में हो पर अनुराग कभी छीन कभी पीन होता है। चार दिन मचल लिया, चार दिन भूल गए ऐसा भी तो होता है। कभी-कभी आनंद में डूब जाते हैं कभी महीना भक्ति छूट जाती है। यह छीन-पीन जो भक्ति की पद्धति है यह स्थिति ना हो, इसके लिये गुरु चरणों के पराग चाहिये। जब हमको गुरु चरणों की पराग का बल प्राप्त होगा तो स्थिति यह होगी कि सरस अनुराग मिलेगा, रसमय जीवन होगा। हर तरफ जीवन में आनन्द होगा और सरस होते हैं उनको भगवान की भक्ति के सिवाय उनको और कुछ सूझता ही नहीं।

'अमिअ मूरिमय चूरन चारू, समन सकल भव रुज परिवारू'। हे हरिभक्तों! यह चरणारविंद की धूली संजीवनी बूटी है, यह दिव्य चूर्ण है भव रुज परिवारों को शमन करने वाला। भव रुज संसार में जितने रोगों का परिवार है, रोग एक दो तो नहीं है। आपने रोग का दर्शन किया होगा। उत्तरकांड मानस जब पढ़ेंगे उनमें आया है 'एक व्याधि बस नर मरहिं ए असाधि बहु ब्याधि, पीड़हि संतत जीव कहुँ सो किमि लहै समाधि'- एक ही रोग के वश होकर मनुष्य मेर जाते हैं, फिर ये तो बहुत से असाध्य ...अगले अंक

शिव महापुराण कथा

(वेद मंदिर अहमदाबाद)

(पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्णजी महाराज)

पिछले अंक से आगे.....

प्रभु ध्यान दीजिए पति की विकृति को देखकर स्त्री भी अपना चरित्र बिगाड़े ऐसा काम ना करें। आप भगवत शरणागत हैं। ऐसी कोई बात नहीं, आपको भी उन जैसा होने की जरूरत नहीं है। आप भगवत आश्रित हो जाएं, आप भगवत सेवा में लग जाओ। पहले छोटी-छोटी उम्र में लड़कियों का ब्याह हो जाता था और पति चले गए कोई कारण से तो उन छोटी-छोटी कन्याओं के जीवन के बिगड़ने की संभावना ज्यादा रहती थी। हमारे जोधपुर में एक संत हुए श्री गुरु अजनेश्वर जी महाराज। जिन स्त्रियों के पति कम उम्र में चले जाते पति के अभाव में चरित्र भी बिगड़ सकता था भाई, ऐसी महिलाओं को श्री गुरु अजनेश्वर जी महाराज बुलाते और उनको कहते देखो पति कोई सा भी हो संसार में वह कभी ना कभी तो जाएगा ही। गुजराती में कहावत है- 'संसारी नो सुख छे काछो, अने परणी ने पाछो' इसलिए भैया भगवान को अपना सच्चा पति समझना चाहिये। ठाकुर जी हमारे सच्चे पति हैं।

मीरा जी कहती है- सदा रे सवागण कदे नी अभागण। अरे मैं तो अजर अमर वर पायो हे माँ, वृन्दावन म्हारो सासरियो। अरे मैं तो सांवरिया ने वर पायो हे माँ, वृन्दावन म्हारो सासरियो।

माताओं-बहनों! ऐसा नहीं होना चाहिये कि किसी के पति बिगड़ जाय तो पत्नी सोचे कि मैं भी क्यों पीछे रहूँ, मैं भी बिगड़ जाती हूँ। पति खड्डे में पड़े तो पीछे मैं भी पड़ूं, ऐसा नहीं होना चाहिये। ऐसा ना करें ऐसा ना करें। तो वहाँ बिंदूक भी बिगड़ गया और पीछे-पीछे उसकी पत्नी चंचुला भी बिगड़ गई उसका नाम चंचुला था वह भी बिगड़ गई। दोनों ने अपना जीवन बिगाड़ लिया और भैया इस प्रकार एक दिन उस बिंदुला का जो पति था वह मर गया। विषय भोग करते-करते वह मरकर के पिशाच बना प्रेत बना और यह चंचुला थोड़े समय और जीवित रही। बुढी हो गई, बुढ़ी हो गई तो घर वालों ने कहा कि अब घर में आपके लिए जगह नहीं है, निकलो घर से।

अब निरंतर सुखों में रचे-पचे रहने वाले लोगों को जब ऐसे घर से निकलना पड़ता है तो उनके लिए बहुत कठिन हो जाता है, बहुत मुश्किल हो जाता है, पर कभी-कभी परिस्थितियों कहाँ ले जाती है कुछ पता ही नहीं चलता है। खैर अब उसको घर से निकाला तो वह स्त्री वहाँ से जैसे-तैसे कर गोकर्ण क्षेत्र में गई। अब घर वालों ने तो महत्व देना बंद कर दिया। बुढ़ी हो गई, कर्म भी कोई अच्छे नहीं थे तो घर वालों ने उसकी तरफ ध्यान देना कम कर दिया। वे तो इस इंतजार में थे कि कब मरे, कब पीछा छूटे इससे। इंसान की जिंदगी में भैया देखो ऐसा भी कभी वक्त आता है। कोई वक्त ऐसा भी होता है जब लोग कहते हैं कि हम तो आपका इंतजार कर रहे हैं आप कब आओगे, आप कब आओगे और वही संसार एक समय यह कहता है कि कब मरो और कब आपसे पीछा छूटे। अब उस चंचूला को घरवाले रोटी नहीं देते, कोई पूछता नहीं।

आगे क्या हुआ कि शिव भक्तों का एक समूह गोकर्ण जा रहा था। गोवा के समीप कोंकण क्षेत्र में उधर गोकर्ण एक क्षेत्र है व गोकर्णेश्वर महादेव है वहाँ। शिव भक्तों का समूह वहाँ जा रहा था तो चंचुला उनके साथ हो गई। तो वे भक्त क्या करते थे कि स्वयं ही भोजन बनाते थे। पहले ये रास्ते में रेस्टोरेंट, होटलें आदि नहीं होते थे तो भैया व्यक्ति की यात्रा तपपूर्ण होती थी। बुरा न माने अब तपपूर्ण नहीं है, अब सुविधापूर्ण है। एक बात बोलें- हमारे एक साथी है वह एक बार किसी तीर्थ में तीर्थ करने

गया, हम उस तीर्थ का नाम नहीं लेने वाले हैं, क्योंकि नाम लेंगे तो फिर जो लोग गए हैं या जाने वाले हैं उनको हमारी बात से कष्ट हो सकता है। उसने कहा कि हम लोग एक बार उस तीर्थ पर गए तो हमें बहुत अच्छा लगा तो हम फिर एक दो बार गए। मैंने कहा कि इतनी भक्ति बढ़ गई आपकी क्या हुआ बार-बार आप वहाँ गये? बोला नहीं भक्ति के कारण नहीं गए। बोले भंडारे के कारण गये। रास्ते में ऐसे गजब भंडारे कि भाई तेरे को क्या बताएं? इडली, डोसा, कचोरी, समोसा, सैंडविच जो खाएं वो हाजिर। फलों में जो खाओ वह मौजूद है। लोग हाथ जोड़-जोड़ कर खिला रहे हैं। मैंने कहा पैसे? तो बोला कोई पैसा नहीं, सब फ्री और वो भी देशी घी में। उस तीर्थ के जो अधिश्वर हैं उनके दर्शन, उनकी प्रसन्नता उसकी बातों में कहीं नहीं थी सिर्फ वह बढ़िया खान-पान के लिये बार-बार गया।

मेरे भाई-बहन! ऐसी तीर्थ यात्रा, तीर्थ यात्रा नहीं यह तो पर्यटन हो जाता है। नहीं तो तीर्थ में जाने वाले का तप अपने आप हो जाता है। रास्ते में वे शिव भक्त रुकते थे वहाँ स्वयं भोजन प्रसाद बनाकर पाते और फिर कीर्तन करते थे। अपनी देख लो, तीर्थ में जाते हैं और जहाँ रुकते हैं वहाँ क्या करते हैं देख लो, सोच लो। वे शिव भक्त जहाँ रुकते वहाँ कीर्तन करते, फिर मिलकर रसोई बनाते, रसोई बनाने के बाद सब लोग भोग लगाते और भोजन करते। वह चंचुला वहाँ नजर आ जाती थी तो उसको भी थोड़ा भोजन दे देते थे। वह भी खा लेती थी और इस प्रकार सब लोग घूमते-घूमते गोकर्णेश्वर क्षेत्र में पहुँचे। वहाँ जब पहुँचे भक्त तो भगवान का शिवजी के दर्शन करके वापस रवाना हो गए पर इतने दिनों शिव भक्तों के संग में रहने से और उन शिव भक्तों के हाथ का अन्न खाने से चंचुला की बुद्धि शुद्ध हो गई और मंदिर के एक विद्वान ब्राह्मण के पांव पकड़ लिए मेरी मुक्ति कराओ, मेरी सद्गति कराओ, मैंने इतने पाप किये। सबसे पहले प्रायचित्त अपने पापों को स्वीकार करना। करूणानिधान अपने पापों को स्वीकार कर लीजिये, उनका फल आधा हो जायेगा। चंचुला ने अपने सारे दोष स्वीकार किए और विद्वान ब्राह्मण के चरण पड़कर कम कहा कि मुझे शुद्ध करो, मुझे पवित्रता दो, मुझे भगवत कृपा के, शिव कृपा के लायक बनाओ। तब महात्मा जी ने कहा, उन पंडित जी ने कहा मेरी बहन! मैं तो कुछ जानता नहीं हूँ बस शिव की कथा जानता हूँ। तुम बैठो! मैं तुम्हें शिव की कथा सुनाता हूँ और उस चंचुला ने इतने प्रेम से शिव कथा सुनी, इतने प्रेम से शिव कथा सुनी कि ऐसा लगता था मानो साक्षात् पार्वती जी ही बैठकर शिव कथा सुन रही हो। इतने ध्यान से उसने शिव कथा सुनी और करुणा निदान जब शिव कथा पूर्ण हुई उस चंचुला की वह अपवित्र देह छूट गई और पवित्र देह प्राप्त करके वह शिवलोक में गई और शिवलोक में भी उसको कोई साधारण स्थान प्राप्त नहीं हुआ, पार्वती जी ने उसे अपनी सहेली बना लिया। यह शिव कथा सुनने का प्रभाव है।

सहेली ऐसे ही थोड़े ही बन जाती है, यह शिव कथा का प्रभाव है। भाई सहेली ऐसी थोड़ी बन जाती है कि बगल में बैठी और पूछ लिया कि कैसे ठीक है, कहाँ रहते हो आप। हम तो यहीं मणीनगर में रहते हैं, आप कहाँ रहते हो? हम इधर जमालपुर के पास रहते हैं। आते रहते हो? हाँ राज आते हैं। तो ठीक है मिलते रहना। हाँ जी कल मिलते हैं। और इस प्रकार मैत्री हो गई। कृपानाथ! ऐसे नहीं, दोनों में कोई एक चीज समान होनी चाहिए, कुछ तो दोनों में एकरूपता होनी चाहिए, तब मैत्री होती है। तो उस चंचुला में और पार्वती जी में एक बात समान क्या थी? इनका भी शिव कथा में प्रेम था और इनका भी शिव कथा में प्रेम था। इसलिये पार्वती जी ने इसको अपनी सहेली बना लिया। अब पार्वती जी के साथ में वह रहने लगी। अब बस वह अवसर देखने लगी

मौका देखने लगी और एक दिन मौका पाकर के जब पार्वती जी ने कहा- देवी कोई बात हो तो बोलो! कुछ तुम्हारे मन में हो तो बोलो! तो चंचुला ने कहा-

तथैव कुरु कल्याणी कृपया दीनवत्सले।
महादेवी महेशानि भर्ता मे वृषलीपति।
तत्तः पूर्व मृतः पापी न जाने कां गतिं गतः।।

चंचुला ने कहा हे माँ! हे पार्वती जी! हे कल्याणी दिनवात्सले! मेरी इच्छा है, मेरे मन में एक भाव है। बोलो क्या बात है? मेरे पति कहाँ है, वह किस हाल में है? उनकी क्या गति है? जरा मुझे बताइए और कुछ ऐसी कृपा कीजिए कि हम लोग फिर से साथ रह सकें। कृपानाथ! यह सुनकर पार्वती जी का हृदय भर आया। ऐसे पापी दुराचारी पति के लिए भी तेरे मन में ऐसा भाव? भाई साहब! एक बात बोलूं लोग कहते हैं कि पुत्र कल्याण करता है, नही! अगर आपको कोई धर्मशिला पत्नी मिली है तो पत्नी कल्याण करती है, अगर वह धर्मशिला है तो पत्नी कल्याण करती है।

पुत्र तो तर्पण करेगा, पुत्र आपके लिए पिंडदान आदि सब करेगा लेकिन सिर्फ पुत्र है इस नाते से कर रहा है, उसकी रुचि है या नहीं कि मेरे पिता पूज्य पितृ वे दिव्य लोक में जाएं। ऐसी इच्छा, ऐसी रुचि भी तो होना चाहिये। उसकी क्यों रुचि हो, उसको तो बस पंडित जी ने कह दिया यह करो वो करो। कितने युवा भाई है जो तर्पण करते समय सोचते भी हैं कि हम जो तर्पण कर रहे हैं वह हमारे पितरों को ऐसे मिले। पंडित जी ने कहा यू उंगली करो, यूं उंगली करो और कर दिया लेकिन एक स्त्री अपने पति के कल्याण का वास्तविक चिंतन करती है। पार्वती जी का हृदय भर आया। पार्वती जी ने कहा ठीक है, हे देवी! तुम्हारा पति पापात्मा इस समय पिशाच की अवस्था में है। नरक तो भोग लिया, नरक भोगने के बाद अब वह पिशाच की अवस्था में है। तो माँ मेरे पति की सद्‌गति कैसे होगी? इस पर पार्वती जी ने कहा- सुनो यदि तुम्हारा पति जो पिशाच योनि में है वह शिव कथा सुन लेगा, शिव पुराण यदि सुन लेगा तो उसकी सद्‌गति हो जाएगी। अब उसको शिव कथा सुनाए कौन? बुरा मत मानना, जो भाई आप लोगों को कथा सुनाने के लिए कितना श्रम करना पड़ रहा है बताओ कैसा मंच बनाना पड़ा है, कैसे एसी कूलर पंखा लगाने पड़े हैं, कितनी व्यवस्थाएं करनी पड़ी है, किस -किस तरीके से सब फोन करना पड़ा तब जाकर कहीं आप लोग पधारे हो। आप समझ गये कि मनुष्य को कथा सुनना कितना कठिन है तो वो तो पिशाच है, पिशाच तो अपने आप में अहंकार में भरा हुआ होगा, उसको कथा सुनाना बहुत कठिन है। चंचुला ने कहा- माताजी आप कह रहे हो कि मेरे पति को शिव पुराण सुनाओ तो उसकी सद्‌गति हो जाएगी, जब हम पति-पत्नी की तरह साथ रहते तब भी मेरी बात नहीं सुनते तो अब तो वे पिशाच बन गए हैं और उस बदत्तर स्थिति हुई है, अब भला मेरी बात क्यों सुनेंगे वे। अब भला मेरी बात क्यों सुनेंगे।

तब पार्वती जी ने एक तुम्बरु नाम के गंधर्व को बुलाया और कहा- तुम भरो अतः तुंबा रोमा हो या शिव शक्ति का जैसे भगवान नारायण के नारद जी है ना रात दिन श्री हरि की कीर्ति गाते हैं ऐसे ही भगवान शिव के पार्षद हैं तुंबरू, गंधरावराज तुंबरू जो निरंतर वीणा लेकर शिव कीर्ति गाते हैं उनको आज्ञा करी पार्वती जी ने मेरी सहेली है ये, इनका पति पिशाच बना है, जाओ, जाकर के और शिव कथा सुनाओ और शिव कथा सुना के उसके हृदय को शुद्ध करके और उसको यहाँ लेकर के आओ।

करुणानिधान! आपको सुनकर बड़ा आनंद होगा यह पहला श्रोता ऐसा है, बापूजी इसको शिव कथा सुनाने गए तो वो बोला कथा तो बाद में सुनाना, पहले मैं तुम्हारा बालभोग करूंगा। बांधा उसको जबरदस्ती बांधकर उसको बिठाया और फिर कथा सुनाई। जबरदस्ती स्त्रोता बनाया ....लगातार अगले अंक में

परमपद

(जीव का अपना असली घर)

साभार : गीता साधक संजीवनी

पिछले अंक से आगे......

परमपद को न तो आधिभौतिक प्रकाश (सूर्य, चन्द्र आदि) प्रकाशित कर सकता है और न आधिदैविक प्रकाश (नेत्र, मन, बुद्धि, वाणी आदि) ही प्रकाशित कर सकता है। कारण कि यह स्वयं प्रकाश है। इसमें प्रकाश्य प्रकाशक का भेद नहीं है। 'गत्वा' में गति है, प्रवृत्ति नहीं, क्योंकि अंश की अंशी की ओर गति होती है, प्रवृत्ति नहीं। प्रवृत्ति तो परत: होती है, पर गति स्वत: होती है। **गति और प्रवृत्ति :** गति स्वत: स्वाभाविक होती है और उसमें परिश्रम (प्रयत्न), उद्योग तथा कर्तृत्व नहीं होता। परन्तु प्रवृत्ति अस्वाभाविक और श्रमसाध्य, उद्योग साध्य तथा कर्तृत्व सहित होती है। प्रवृत्ति तो अहंकार युक्त होने पर होती है, पर गति अहंकार रहित होने पर होती है। इसलिये गति 'स्व' की तरफ होती है और प्रवृत्ति 'पर' की तरफ होती है। गति परमात्मा की तरफ होती है और प्रवृत्ति संसार की तरफ होती है। गति चिन्मयता की तरफ होती है और प्रवृत्ति जड़ता की तरफ होती है। गति असीम की तरफ ले जाती है और प्रवृत्ति सीमित की तरफ ले जाती है। गति स्वाधीन करती है और प्रवृत्ति पराधीन करती है। भोग तथा संग्रह का सुख चाहने पर प्रवृत्ति होती है और दूसरे को सुख देने पर गति होती है।

गति का उद्‌गम-स्थान 'सत् है और प्रवृत्ति का उद्‌गम-स्थान 'असत्' है। जैसे, गंगा का उद्‌गम- स्थान गंगोत्री है। अगर गंगा को रोककर एक ऐसा बाँध बना दिया जाय, जो गंगोत्री से भी ऊँचा हो तो गंगा का जल स्वत: अपने उद्‌गम-स्थान गंगोत्री की तरफ जायगा। इस प्रकार गंगा का अपने उद्‌गम- स्थान की ओर जाना 'गति' है। अत: गति दो तरह से होती है- संसार (भोग और संग्रह)की तरफ जाना बन्द करने से अर्थात् उससे विमुख होने से अथवा अपने उद्देश्य परमात्मा की तरफ जाने से अर्थात् उनके सम्मुख होने से। नित्यप्राप्त परमात्मा की जो अप्राप्ति मानी है, उसका मिटना ही परमात्मा की तरफ गति होना है। गति में परमात्मा से मानी हुई दूरी मिटती है और वास्तविक एकता प्रकट होती है।

साधक को ऐसा अनुभव होता है कि कई वर्ष पहले जैसे भाव तथा आचरण थे, वैसे अब नहीं रहें, प्रत्युत पहले से अधिक श्रेष्ठ हो गये तो यह साधक की गति हुई है। साधनावस्था में जो गति होती है, उसमें अहम् का सूक्ष्म संस्कार रह सकता है, पर मुक्त होने के बाद प्रतिक्षण वर्धमान प्रेम की तरफ जो गति होती है, उसमें अहम् का सूक्ष्म संस्कार भी नहीं रहता अर्थात् अहम् का अत्यन्त अभाव हो जाता है। इसका कारण यह है कि जीव परमात्मा से जितना दूर होता है, उतना ही उसमें अहंकार रहता है। स्वरूप में स्थित होने पर भी सूक्ष्म अहंकार रहता है, जो मुक्ति में तो बाधक नहीं होता, पर अन्य दार्शनिकों से मतभेद करने वाला होता है। परमात्मा से अभिन्नता होने पर अहंकार सर्वथा मिट जाता है।

सम्बन्ध पूर्वश्लोक में भगवान् ने अपने परम ध ाम का वर्णन करते हुए यह बताया कि उसको प्राप्त होकर जीव लौटकर संसार में नहीं आते। उसके विवेचन के रूप में अपने अंश जीवात्मा को भी (परम धाम की ही तरह) अपने से अभिन्न बताते हुए, जीव से क्या भूल हो रही है कि जिससे उसको नित्यप्राप्त परमात्म स्वरूप परमधाम का अनुभव नहीं हो रहा है, इसका हेतु सहित वर्णन आगे के श्लोक में करते हैं।

ममैवांशो जीवलोके जीवभूत: सनातन:।
मन:षष्ठानीन्द्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षति।।

इस संसार में जीव बना हुआ आत्मा (स्वयं) मेरा ही सनातन अंश है; (परन्तु वह) प्रकृति में स्थित मन और पाँचों इन्द्रियों को आकर्षित करता है (अपना मान लेता है)। इसमें परमात्मा स्पष्ट कहते हैं कि यह जीव केवल मेरा ही अंश है, इसमें प्रकृति का किंचिन्मात्र भी अंश नहीं है, फिर भी भूल से यह शरीरादि जड़ पदार्थो को अपनी और आकर्षित करता है अर्थात् अपना मानता है जिससे उसमें अहमता-ममता करके फंस जाता है और परमधाम (अपने असली घर) का अनुभव नहीं होता है।

गोसंवर्धन वर्तमान की आवश्यकता

(अम्बा लाल सुथार, सम्पादक)

गाय सड़कों पर दु:खी होकर निराश्रित घूम रही है और भैंस व जर्सी घरों में सुख पा रही है इसके कई कारण है जिनमें सबसे बड़ा कारण गाय से दूध की मात्रा कम मिलना। हालांकि जितना भी गाय से दूध मिलता है वो अमृत है और अन्य पशुओं से प्राप्त दूध बीमारियों का घर है, लेकिन लोभ के कारण दूध के व्यापार के लिये यह सब किया जा रहा है।

गाय के दूध कम होने में उसकी नस्ल का ह्रास होना प्रधान कारण है। गाय की नस्लों के ह्रास होने में जिम्मेदार हम मनुष्य ही हैं, लेकिन उसकी सजा गाय को दी जा रही है। हमने दो गलतियों की जिस कारण गाय की नस्लें गिरी और गिरती जा रही है। पहली गलती तो गाय को खुराक कमजोर देना और दूसरी गलती उसे किसी भी बिना नस्ल के नंदी के साथ छोड़ देना।

इसलिये गोमाता को पुन: घरों में पहुँचाने के लिये उसकी नस्लों को मुख्य रूप से दूध के लिये तैयार करना ही हल है। इसी को नस्ल संवर्धन कहा गया है। वर्तमान की नस्लों को उन्नत करने की दो विधियों है-

(1) संवर्धन (ब्रीडिग)- इस विधि में गाय और उत्तम नंदी एक ही नस्ल के होते हैं। कम दूध वाली गाय को उसी की नस्ल के ऐसे नंदी से मिलाया जाता है जिसकी माँ अधिक दूध वाली है और उसकी दादी और नानी भी अधिक दूध वाली रही है।

(2) उन्नतिकरण (अपग्रेडेशन)- इस विधि में उत्तम सांड और गाय की नस्लें अलग-अलग होती है। कम दूध वाली नस्ल को अधिक दूध वाली नस्ल के नंदी से मिलाया जाता है। नंदी की पिछली पीढ़ियों में दूध की मात्रा अच्छी रही हो अर्थात् नंदी की माँ, दादी और नानी भी अधिक दूध वाली रही है।

अपग्रेडेशन में एक सावधानी आवश्यक है कि गाय की और नंदी की नस्ल में शारीरिक बनावट, वजन आदि में बहुत अंतर नहीं होना चाहिये। अगर गाय की नस्ल छोटी और नंदी की नस्ल बड़ी होगी तो प्रसव होने में दिक्कत आयेगी और कभी प्रसव के समय कोई पास में नहीं हो तो गाय बहुत कष्ट पा सकती है और कभी गोमाता के प्राण भी जा सकते है। जैसे मालवी नस्ल की गाय है तो उसके साथ गिर नंदी नहीं छोड़ा जा सकता है, क्योंकि गिर का सिर बड़ा होता है, जो प्रसव के समय फंस सकता है। मालवी नस्ल की बड़ी गोमाता को थारपारकर और साहिवाल के साथ मेल करा सकते हैं लेकिन मालवी नस्ल की छोटी गाय का अपग्रेडेशन नहीं करवाना चाहिये। गिर नंदी से तो अन्य किसी भी नस्ल का अपग्रेडेशन नहीं करवाना चाहिये। सांचोरी और कांकरेज नस्ल की गोमाता का थारपारकर, साहिवाल और राठी के साथ अपग्रेडेशन करवाया जा सकता है। अपग्रेडेशन लगातार तीन पीढ़ी तक एक ही नस्ल के नंदी से करवाने पर दूध का अच्छा उत्पादन मिल सकता है।

संवर्धन और अपग्रेडेशन में सबसे बड़ी समस्या गाँव और ढ़ाणियों में इच्छित और योग्य नंदी नहीं होना है। आज गाँव-गाँव गोशालाएं तो खुल गई है लेकिन हर गोशाला में अच्छे कुल का नंदी उपलब्ध नहीं है। सामान्यतया यह होता है कि अच्छी कद काठी के नंदी को अच्छी नस्ल का समझकर गोशाला में रख लेते हैं और उसी से गाएं आती है फिर संवर्धन कैसे होगा? अपग्रेडेशन के लिये तो गाँवों में स्थानीय नस्ल के अलावा तो कोई नंदी का विकल्प ही नहीं है। ऐसी परिस्थिति में लोगों ने कृत्रिम गर्भाधान को अपनाना शुरू किया। अज्ञानता और मूर्खता के कारण वेदलक्षणा गोधन की इन

लोगों ने बड़ी भारी हानि कर दी। संवर्धन और अपगेडेशन के नाम पर वेदलक्षणा भारतीय नस्लों के जर्सी और हॉलेस्टीन जैसे पशुओं के बीज (सीमन) चढ़ाने लग गये। सभी गोपालकों और इस पेशे में लगे चिकित्सकों से अनुरोध है कि एक बात को पक्का समझ लें कि संकर पशु गाय नहीं है, उनके साथ हमारी वेदलक्षणा गोमाता को क्रॉस कराने का पाप न करें। इससे हमारी देशी नस्लों का संवर्धन या अपग्रेडेशन नहीं हो रहा है, पूरी नस्लें ही समाप्त हो रही है। ना समझी में कितना बड़ा अनर्थ चल रहा है। संकर पशुओं का दूध हमारी गोमाता के दूध के समान अमृततुल्य नहीं होता है, इन संकर पशुओं का दूध मनुष्य के लिये हानिकारक होता है और इससे डायबिटीज और तमोगुण बढ़ता है।

अगर आपके यहाँ उत्तम नस्ल का नंदी उपलब्ध न हो और आप कृत्रिम गर्भाधान करवाते आए हो तो अब आपको चिकित्सक को अपनी पसंद बताना है और अपनी गोमाता की नस्ल का ही बीज (सीमन) रखवाना है और यदि आप अपग्रेडेशन करना चाहते हैं तो भी चिकित्सक को अपनी पसंद बताना होगा, नहीं तो ये लोग उनके पास जो आसानी से उपलब्ध बीज (सीमन) होता है वो रख देते हैं। गर्भाधान कोई बच्चों का खेल नहीं है कि कुछ भी चलेगा। आपका लक्ष्य अपनी गोमाता की आने वाली पीढ़ियों को वर्तमान से कई गुणा अधिक उन्नत बनाने का होना चाहिये। आपका लक्ष्य केवल यह नहीं होना चाहिये कि हमारे पास उपलब्ध गोमाता दूध देती रहे उसके लिये उसका गर्भाधान करवाते रहें।

यह उत्तम नस्ल से गर्भाधान की बात हो गई। अब बात आती है इससे जो संतान होगी उसको दिन में कम से कम 3 बार भरपूर दूध पिलावें और जब चारा पाने लग जावे तब उसको अच्छा चारा, दाना दें। अगर आहार कमजोर होगा तो निश्चित रूप से शरीर कमजोर होगा और आगे जाकर इसका विपरीत प्रभाव दूध पर पड़ेगा। हमने ऐसे-ऐसे गोपालक देखें हैं जिनके पास गोमाता को देने के नाम पर न तो चारा है और न ही दाना और अधिक से अधिक दूध की चाहत रहती है। ऐसे गोपालक तो लोटे के अंदर ही दूध निकालते देखे हैं। जब गोमाता को भरपेट भोजन ही नहीं मिलेगा तो उसका शरीर क्षरण होता जायेगा, उसको तो अपने प्राणों की पड़ी है और आपको दूध चाहिये? अगर आपको निर्दोष दूध चाहिये तो गोमाता की बहुत बढ़िया सेवा करनी पड़ेगी जिससे गोमाता अपने बछड़े को दूध पिला सके और बचा हुआ अमृत आपको पिला सके।

मैं अपनी स्वयं की स्थिति को देखते हुए वर्तमान के लिये संवर्धन की एक योजना आवश्यक समझता हूँ, यह कब साकार होगी या नहीं होगी यह तो ईश्वर को ही पता है। मेरे घर पर गोमाता है उसे एक किलोमीटर दूर भी नंदी के पास ले जाना हो तो हमारी सामर्थ्य नहीं है। गोमाता रखना भी है और संवर्धन भी करना है। मेरे जैसे अनेकों परिवार हैं जो गोमाता की अच्छी सेवा करने का भाव तो रखते हैं, पर अच्छे नंदी तक जाने की सामर्थ्य नहीं रखते हैं, उनके लिये ऐसा भाव है कि श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा जैसी संस्थाओं के पास अच्छे नंदी हों, कुछ वाहनों पर नंदी रथ बने हो। जिस गोपालक को जरूरत हो वहाँ तक रथ में बैठाकर नंदी महाराज को पहुँचाया जावे। उसका जो भी व्यय आता हो वो गोपालक पर रहे। उन्नत नस्ल के 50 नंदियों की एक नंदीशाला हो और 10 रथ हो तो उस क्षेत्र में संवर्धन में अच्छा कार्य हो सकता है। अगर कोई भामाशाह संवर्धन पर सेवा कार्य करने का भाव रखते हैं तो ऐसा संवर्धन केन्द्र संचालित किया जा सकता है। आरम्भ में भले ही सबको ऐसा लगे कि यह तो बहुत कठिन है, नंदी को छोड़ने जाना, फिर 8-10 घण्टे बाद लेने जाना, पर कुछ दिन बाद यह आम कार्यो जैसा ही सहज लगेगा।

(ये लेखक के अपने निजी विचार है)

महान गो-वैज्ञानिक

सहदेव

महाभारत के पात्रों में सहदेव (पाण्डु के सबसे छोटे पुत्र) को उनकी विनम्रता, त्रिकालदर्शिता और गो-पालन के प्रति उनके अगाध प्रेम के लिए जाना जाता है। विशेष रूप से गोसेवा और गोवंश के प्रति उनकी भक्ति भारतीय संस्कृति में गो-कल्याण का एक अनुपम उदाहरण प्रस्तुत करती है।

पांडवों के वनवास में बारह वर्ष पूर्ण होने वाले थे। अब उन्हें एक वर्ष के लिये अज्ञातवास में रहना था। इस पर एक दिन युधिष्ठर ने द्रोपदी और अपने चारों भाइयों को बुलाकर मंत्रणा की कि हम एक वर्ष के अज्ञातवास में कहाँ रहेंगे और क्या-क्या कार्य करेंगे? आपसी मंत्रणा में तय हुआ कि मत्स्य देश के राजा विराट के पास रहेंगे। राजा युधिष्ठर एक-एक भाई को जब पूछ रहे थे कि आप क्या कार्य करना पसंद करेंगे तब सहदेव ने अपने लिये बताया कि- मैं राजा विराट की गौओं की संभाल रखूंगा। कितनी ही उद्धत गो क्यों न हो मैं उसे काबू में कर लेता हूँ। गौओं को दूहने और उनकी परीक्षा करने में भी मैं कुशल हूँ। गौओं के जो लक्षण या चरित्र मंगलमय होते हैं उनका भी मुझे अच्छा ज्ञान है। मैं उन शुभ लक्षण वाले बैलों को भी जानता हूँ जिनके मूत्र को सूंघ लेने मात्र से बांझ स्त्री भी गर्भधारण कर सकती है। इसलिए मैं गौओं की सेवा करूंगा। गोसेवक वैश्य के रूप में मेरा नाम होगा तन्तिपाल। मुझे कोई पहचान नहीं सकता। मैं अपने कार्य से राजा को प्रसन्न कर लूंगा।

समय आने पर द्रोपदी सहित पांचों भाई वनों से पैदल चलते हुए विराट नगर पहुँच गये। नगर के बाहर एक शमी विशाल वृक्ष पर अपने अस्त्र-शस्त्र छुपाकर बारी-बारी से अलग-अलग राजा विराट की सभा में जाकर पूर्व निर्धारित सेवा मांगने का निश्चय हुआ। सबसे पहले राजा युधिष्ठर, फिर भीमसेन, फिर द्रोपदी और फिर सहदेव ग्वाले का वेष बनाकर वैसी ही भाषा बोलते हुए राजा विराट जब गोशाला आये हुए थे तब वहाँ आये। उस तेजस्वी पुरुष को देखकर राजा स्वयं उनके समीप गये और पूछने लगे- तुम किसके आदमी हो, कहाँ से आये हो और कौनसा काम करना चाहते हो?

सहदेव ने कहा- मैं जाति का वैश्य हूँ, मेरा नाम अरिष्टनेमि है। पहले मैं पांडवों के यहाँ गोसेवा प्रबंधन का कार्य करता था, लेकिन पता नहीं अब वे कहाँ चले गये हैं। अब मुझे अपनी जीविका चलाने के लिये काम करना है। पांडवों के बाद आपके सिवा कोई राजा मुझे पसंद नहीं है, इसलिये काम की तलाश में आपके यहाँ आया हूँ।

राजा विराट ने पूछा- आपको क्या अनुभव है गौओं की संभाल का तथा आप किस शर्त पर यहाँ रहना चाहोगे?

सहदेव ने कहा- राजन! मैंने पूर्व में बता ही दिया है कि मैं पांडवों की गौओं को संभालने का काम करता था। वहाँ लोग मुझे तन्तिपाल कहते थे। 10 योजन (40 कोस/120 किलोमीटर) के अंदर जितनी गौएं रहती हैं, उनकी भूत, भविष्य और वर्तमान काल की संख्या मुझे सदा मालूम रहती है, कितनी थी, कितनी है तथा आगे कितनी होगी इसका मुझे ठीक-ठीक ज्ञान रहता है। जिन उपायों से गोओं की संख्या में वृद्धि होती रहे, उन्हें कोई रोग-व्याधि न सतावे उन सबको मैं जानता हूँ। इसके सिवा मैं उत्तम लक्षणों वाले ऐसे बैलों की पहचान रखता हूँ जिनका मूत्र सूंघने मात्र से वन्ध्या स्त्री को भी गर्भ रह जाता है। मेरी कोई शर्त नहीं है, जो वेतन आप दोगे उसी में संतुष्ट रहूंगा।

राजा विराट ने कहा- मेरे पास एक ही रंग का एक लाख गोवंश है, उनमें सभी उत्तम गुणों का सम्मिश्रण है। आज से मेरे सम्पूर्ण गोवंश को, उनके सेवकों को आपके अधिकार में करता हूँ। आज से

मेरा सम्पूर्ण गोवंश और गोशाला आपके अधीन रहेगा। यहाँ महाभारत और अन्य पौराणिक संदर्भों के आधार पर सहदेव निम्नलिखित विषयों के विशेषज्ञ थेः-

1. वे गौशाला की हजारों गायों की सटीक संख्या गिनने और उनके वंश वृक्ष (History) को याद रखने में निपुण थे।

2. वे उग्र और चंचल गायों व बैलों को शांत करने और उन्हें वश में करने की कला (Taming their fiercenes) जानते थे।

3. सहदेव को उन उत्तम लक्षणों वाले सांडों की पहचान करने की विद्या आती थी, जिनकी पूजा की जाती है। वे केवल मूत्र की गंध से यह पहचान सकते थे कि कौन सा बैल उत्तम संतानोत्पत्ति के योग्य है।

4. वे गायों को रोगों से मुक्त रखने और उनके असाध्य रोगों का उपचार करने की प्राचीन पशु-आयुर्वेद विद्या में विशेषज्ञ थे।

5. उनके पास ऐसी गुप्त विद्या थी जिससे गायों की संख्या में बहुत कम समय में तेजी से वृद्धि की जा सकती थी। राजा विराट के यहाँ उनके आने के बाद गायों की संख्या और दूध उत्पादन में भारी वृद्धि हुई थी।

6. वे 10 योजन के दायरे में रहने वाली सभी गायों के भूत, वर्तमान और भविष्य की स्थिति की गणना करने में सक्षम थे।

7. सहदेव का यह ज्ञान दर्शाता है कि वे केवल एक चरवाहे नहीं, बल्कि एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखने वाले गो चिकित्सक और प्रबंधक भी थे।

8. वे गायों को कभी भी भयभीत नहीं होने देते थे।

9. वे बछड़ों के हिस्से का दूध सुरक्षित रखने के बाद ही शेष दूध का उपयोग सुनिश्चित करते थे।

10. सहदेव को गायों के शुभ और अशुभ लक्षणों का पूर्ण ज्ञान था। वे गाय की चाल और उसकी श्वास देखकर यह बता सकते थे कि वह राज्य के लिए कितनी मंगलकारी है।

सहदेव के कुशल प्रबंधन और उनके द्वारा अपनाई गई प्राचीन उपचार विधियों के कारण राजा विराट की गौशाला में गायों के स्वास्थ्य में अभूतपूर्व सुधार हुआ और कुछ ही महिनों में गायों के दूध में 400 प्रतिशत की वृद्धि हुई। उनकी सेवा और प्रेम के कारण गायें अधिक स्वस्थ और दूध देने वाली हो गई। उस काल में राज्य की आय का प्रमुख स्त्रोत गोमाता का दूध और घी हुआ करता था। सहदेव ने अपने गोविज्ञान के कौशल से दूध में चार गुणा वृद्धि कर विराट राजा को प्रसन्न कर दिया। उन्होंने राजा विराट की एक लाख गायों का प्रबंधन इतनी कुशलता से किया कि मृत्यु दर शून्य हो गयी। सहदेव ने गायों के माध्यम से राज्य का कोष और पोषण सुनिश्चित किया।

सहदेव ने गौशाला के गोवंश को न केवल रोगों से मुक्त रखा, बल्कि उत्तम लक्षणों वाले सांडों का चयन करके गौवंश की नस्ल (Breed) को भी सुधारा। उनके द्वारा पहचाने गए बैलों का मूत्र बाँझपन जैसी समस्याओं के उपचार में भी सहायक माना जाता था।

सहदेव ने केवल गायों ही नहीं, बल्कि बैलों को भी इतना अनुशासित और प्रशिक्षित कर दिया था कि वे कृषि और अन्य कार्यो में अधिक कुशल हो गए। एक उत्सव के दौरान उन्होंने राजा विराट के सामने प्रशिक्षित बैलों की टोली का प्रदर्शन कर राजकीय सम्मान प्राप्त किया था।

राजा विराट की गोशाला की व्यवस्था को इतना सुदृढ़ किया कि 120 किमी के दायरे में चरने वाली एक-एक गाय की जानकारी उनके पास रहती थी कि कौनसी गोमाता कब ब्यायी, कब और कौनसे नंदी से ग्याभिन हुई, कितना दूध दे रही है, उसके पीछे बछड़ा है या बछड़ी। आज जैसे कम्प्यूटर पर हिसाब रहता है वैसे वे अपने मस्तिष्क में रखते थे।

दिल्ली में हुआ श्रीराम कथा का दिव्य आयोजन

दिनांक 25 जनवरी से 3 फरवरी तक दिल्ली में श्रीराम कथा का हुआ दिव्य आयोजन।

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा न्यास के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राकेशजी बिन्दल का हुआ स्वागत।

श्री एस. एन. बंसल बने न्यास की दिल्ली एनसीआर शाखा के चेयरमैन।

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा के केन्द्रीय मार्गदर्शक पूज्य श्री दयानन्दजी शास्त्रीजी के मुखारबिन्द से केजरीवाल परिवार के सौजन्य से श्री कृष्ण गोशाला दिल्ली में दिव्य श्रीराम कथा का आयोजन हुआ। इस आयोजन से दिल्ली के गोभक्तों में नवीन ऊर्जा का संचार हुआ।

इसी अवसर पर नव मनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राकेशजी बिन्दल का स्वागत दिल्ली एनसीआर कार्यकारिणी कार्यकर्ताओं एवं गोभक्तों द्वारा किया गया। व्यासपीठ से शास्त्रीजी ने उन्हें गोमाता व संतों का आशीर्वाद प्रदान किया। बिन्दलजी ने परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंदजी महाराजश्री के आशीर्वाद से गोप्रेमी संतों के मार्गदर्शन में गोभक्तों के सहयोग से गोमाता के कार्यो को पूरी निष्ठा से करने का विश्वास दिलाया। इस अवसर पर परम गोभक्त श्री एस. एन. बंसलजी को श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा दिल्ली एनसीआर शाखा का चेयरमेन मनोनीत किया गया। उपस्थित सभी गोभक्तों ने उनका स्वागत और अभिनंदन किया।

इस अवसर पर श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा के सीईओ व प्रभारी आलोकजी सिंहल, मांगीलालजी पारीक, साधुरामजी गर्ग, यशपालजी गुप्ता, हरिओम जी तायल, देवेन्द्रजी जैन, आलोकजी जगवायन, कथा मनोरथी राजीवजी केजरीवाल, पवनजी सराफ, प्रकाशजी कंदोई, विनयजी सिंहल, एन आर जैनजी, रवीन्द्रजी गुप्ता सहित सैकड़ो गोभक्त उपस्थित रहे।

श्री सुरभि शक्तिपीठ कर्णावती में सुरभी हरिहर आराधना मण्डप का धूमधाम से हुआ गौ-अर्पण

श्री सुरभि शक्तिपीठ कर्णावती में सुरभि हरिहर आराधना मण्डप का धूमधाम से हुआ गौ-अर्पण।

उपस्थित गोभक्तों ने लिया गोमाता की सेवा के लिए संकल्प

श्री सुरभि शक्तिपीठ कर्णावती में श्री सुरभि हरिहर आराधना मण्डप का विधिवत् शुभारम्भ श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा के संरक्षक संत श्री योगेशदासजी महाराज के पावन सानिध्य में हुआ। इस अवसर पर मनोरथी श्री जयसुखभाई मिस्त्री एवं श्री आनंदजी जेठा ने सपरिवार यज्ञ में आहुति प्रदान कर कन्याओं के हाथों से मंडप का शुभारंभ करवाया। इस अवसर पर सुरभि शक्तिपीठ संचालन समिति की बैठक भी आयोजित की गई। समारोह में श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा के राष्ट्रीय सचिव श्री ललितजी अग्रवाल, सीईओ व प्रभारी श्री आलोकजी सिंहल, श्री महेन्द्रसिंहजी राजपुरोहित, श्री वेलजीभाई पटेल, श्री देवारामजी डिगारी, श्री श्रीरामजी पुरोहित, श्री घेवरजी बिलड़ सहित सैकड़ों गोभक्त उपस्थित रहे।

इस अवसर पर गोसेवा सहयोगी गोसेवा महिला मंडल ओढव, भरतभाई प्रजापति, वर्दीचन्दजी राजेन्द्रकुमारजी जागेटिया, लालारामजी बहेड़िया,

सुभाषजी जोड़ीवाल,,बालकिशनजी जैथलिया, दीपकभाई सिंधी, हिरेनभाई ठक्कर, महेशभाई, गिरिराजजी एवं 23 गोमाताओं की वार्षिक सेवा प्राप्त करने वाले गोभक्तों का स्वागत एवं सम्मान किया गया। संचालन समिति की बैठक में विभिन्न गोहितार्थ निर्णय लिए गए।

श्री सुरभि शक्तिपीठ कर्णावती में आयोजित हुआ अखण्ड रामायण पाठ

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा द्वारा स्थापित श्री सुरभि शक्तिपीठ कर्णावती में प्रतिमाह शुक्ल पक्ष की सप्तमी और अष्टमी को श्री रामचरितमानस का संगीतमय अखण्ड पाठ का भव्य आयोजन होता है। फाल्गुन मास माह की सप्तमी और अष्टमी का यह आयोजन श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा न्यास के आजीवन न्यासी रहे गोभक्त स्व. श्री राकेश जी चाचाण की प्रथम पुण्य तिथि के निमित्त गोभक्त श्री महावीर प्रसादजी, श्री भवानी शंकर जी, श्री मुकेश जी चाचाण परिवार द्वारा दिनांक 23 फरवरी से 24 फरवरी तक करवाया गया। इसके अंतर्गत श्रीरामजन्म, श्रीराम-जानकी विवाह व श्रीराम राजतिलक तथा सुन्दरकाण्ड का दिव्य आयोजन भी हुआ। कार्यक्रम में उपस्थित सभी गोभक्तों के लिये चाचाण परिवार द्वारा गोव्रर्ती भोजन प्रसाद की व्यवस्था की गई।

इस अवसर पर मदनलालजी अग्रवाल, विनोदजी साहेवाल, कमलेशजी जैन, ललितजी अग्रवाल, सीईओ एवं प्रभारी आलोकजी सिंहल, बालमुकुंदजी अग्रवाल,राजकुमारजी अग्रवाल, हुकुमसिंहजी शेखावत, अंजनीकुमारजी गुप्ता, शिवकुमारजी शर्मा, गोपीरामजी शर्मा, देवारामजी डिगारी, फूलारामजी राजपुरोहित सहित सैकड़ों गोभक्त उपस्थित रहे। इस अवसर पर अनेकों गोभक्तों ने गोमाता की सेवा के संकल्प व्यक्त किए।

श्री रामनाथजी कोविन्द महामहिम पूर्व राष्ट्रपति 11 मार्च को आएंगे अभिनव ब्रजमंडल मनोरमा गोलोक अर्बुदारण्य

गो आवासों का उद्घाटन कर करेंगे गो गोपाल कोरिडोर का अवलोकन।

आदरणीय श्री रामनाथजी कोविन्द महामहिम पूर्व राष्ट्रपति भारत 11 मार्च, 2026 को अभिनव ब्रजमंडल मनोरमा गोलोक अर्बुदारण्य पधारेंगे। इस अवसर पर श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा के संस्थापक एवं प्रधान संरक्षक परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानन्दजी महाराजश्री के पावन सानिध्य में उनके द्वारा नवनिर्मित गो आवासों का उद्घाटन किया जाएगा एवं यहाँ निर्माणाधीन विश्व के प्रथम गो-गोपाल कोरिडोर का अवलोकन करेंगे। इस अवसर पर श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा लोक पुण्यार्थ न्यास की नवगठित केंद्रीय कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह भी आयोजित होगा।

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा द्वारा मनाया गया महाशिवरात्री का पावन पर्व

परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंदजी महाराजश्री के मार्गदर्शन में गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा द्वारा संचालित समस्त गोसेवाश्रमों में दिनांक 15 फरवरी को महाशिवरात्री का पावन पर्व धूमधाम से माया गया। मुख्य कार्यक्रम अभिनव ब्रजमण्डल में प.श्र. महाराजश्री की पावन सन्निधि में आयोजित हुआ जिसमें उपस्थित गोभक्तों द्वारा भगवान श्री गोपेश्वर महादेव का अभिषेक किया गया तथा रात्री जागरण का आयोजन किया गया।

गीत

(तर्ज - रूणिचो है मथुरा कार्शी.)
पथमेड़ो है मथुरा काशी, पथमेड़ो है मथुरा काशी'
तीन लोक रो नाथ बिराजे, वृदावन वासी'' पथमेड़ो हैं..
लोक प्रसिद्व इस गोधाम को, जाणे दुनिया सारी री,
भाइयों जाणे दुनिया सारी
गोदर्शन को आवे भक्त गण, सारा भारतवासी,
पथमेड़ा है मथुरा काशी, पथमेड़ो है मथुरा काशी'
तीन लोक रो नाथ....
गोरक्षक हनुमान बालाजी, द्वारपाल बन बैठा रे
भाईयों द्वारपाल बन बैठा
अष्ठ गोमाता री कृपा भई है, कष्ट पीड़ा मिट जासी,
पथमेड़ो है मथुरा काशी, पथमेड़ो है मथुरा काशी'
तीन लोक रो नाथ....
कामधेनु रो मंदिर प्रथम, शक्ति पीठ बनायो रे
भाईयो, शक्ति पीठ बनायो
दर्शन करलो इस गोमाता रा, मनोरथ पूर्ण हो जासी,
पथमेड़ो है मथुरा काशी, पथमेड़ो है मथुरा काशी'
तीन लोक रो नाथ....
पथमेड़ा री पावन धरा पर, गोचारण हरि कीनो रे
भाईयों, गोचारण हरि कीनो
कोटि तीर्थ में डुबकी लगा लो, चार धाम हो जासी,
पथमेड़ो है मथुरा काशी, पथमेड़ो है मथुरा काशी'
तीन लोक रो नाथ....
गोलासन का भी दर्शन करलो, नंदीबाबा बिराजे रै
भाईयों नंदीबाबा बिराजे
दरबार लगा श्रीराम का, है अयोध्यावासी,
पथमेड़ो है मथुरा काशी, पथमेड़ो है मथुरा काशी'
तीन लोक रो नाथ....
नंदगांव अभिनव ब्रज में,गोवर्धन नाथ जी बिराजे रे
भाईयो, गोवर्धन नाथ जी बिराजे
नंदकिले पर गोपेश्वर जी, दर्शन करो सुख पासी,
पथमेड़ो है मथुरा काशी, पथमेड़ो है मथुरा काशी'
तीन लोक रो नाथ....
पथमेड़ा में गो की सेवा, हरिभाव से होवे रे
भाईयो-हरि भाव से होवे।
गोधाम की परिक्रमा करलो, चौरासी कोसी हो जासी -
पथमेड़ो है मथुरा काशी, पथमेड़ो है मथुरा काशी'
तीन लोक रो नाथ....

--गोसेवक धनराज चौधरी

रजिस्ट्रेशन ऑफ न्यूजपेपर्स सेंट्रल नियम 1935 के 8 वे नियम के अंतर्गत कामधेनु कल्याण नाम के समाचार पत्र के स्वामित्व तथा अन्य विषयों के संबंध में प्रकाशित किये जाने वाले विवरण:

फार्म 4

प्रकाशन का स्थान :- *श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला पथमेड़ा, सांचोर जिला जालोर राज. 343041*
प्रकाशन की अवधि :- *मासिक*
प्रकाशक का नाम :- *अम्बा लाल सुथार*
प्रकाशक का पता :- *कारोला, सांचोर, जालोर राज. 343041*
क्या भारत के नागरिक है? :- *हाँ*
मुद्रक का नाम :- *पुरखाराम पुरोहित*
मुद्रक का पता :- *चारभुजा प्रिंटिंग प्रेस हाडेचा रोड़ सांचोर जिला जालोर राज. 343041*
क्या भारत के नागरिक है? :- *हाँ*
संपादक का नाम :- *अम्बा लाल सुथार*
संपादक का पता :- *कारोला, सांचोर, जालोर राज. 343041*
क्या भारत के नागरिक है? :- *हाँ*
उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझीदार हों :- *श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला पथमेड़ा, सांचोर, जालोर राज. 343041*

मैं अम्बा लाल सुथार एतद्द्वारा यह घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के आधार पर उपरोक्त विवरण सत्य है।

अम्बा लाल सुथार
प्रकाशक के हस्ताक्षर

हिन्दी मासिक पत्रिका ''कामधेनु कल्याण''स्वामी ''श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला पथमेड़ा'' के लिए प्रकाशक एवं सम्पादक अम्बा लाल सुथार, मुद्रक पुरखाराम पुरोहित चारभुजा प्रिंटिंग प्रेस, गोमाता सर्किल, हाडेचा रोड़ साँचौर से मुद्रित करवाकर ''श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला''पथमेड़ा, तहसील-सांचौर, जिला-जालोर (राजस्थान) 343041 से प्रकाशित।

वेदलक्षणा प्रेमहारी

वैद्य मनोज शर्मा आयुर्वेदाचार्य

आधुनिक तनावपूर्ण यांत्रिक जीवनचर्या आधारित शरीर त्रिदोष दुष्टि और सप्तधातु (रस-रक्त- मांस-मेद- अस्थि-मज्जा-शक्र धातु) की सात प्रकार की अग्नि विकृति से अनेकानेक कोष्ठ (पेट) एवं शाखाओं (सात धातुओं एवं संधियां) आदि में आम रस (टोक्सिन फ्री रेडिकल्स) की उत्पनि होकर विशेष रूप से मूत्रवहस्रोतस (वृक्क मूत्रवाहिनियां युरिनरी ब्लेडर - शक्र व मूत्रमार्ग) की दुष्टि एवं मेदोवहस्रोतस (वृक्क -वपावहन- एड्रिनलिन ग्रंथी) की दुष्टि और शुक्रवहस्रोतो दुष्टि (वृषण -शुक्रवाहिनी- शुक्राशय) बहुतायत में मिल रही है।

एक विशेष कारण इन तीनों स्रोतों की दुष्टि का और भी है वह यह कि कार्य की अधिकता एवं संकोचवश लोग मल-मूत्र- अपान वायु के वेगों को बहुत रोके रहते हैं। यह वेगावरोध (प्राकृतिक प्रेशर को रोकना या डिले करना) भी भयंकर वात रोग उत्पन्न करते हुए शरीर के अंगों की क्रियाशीलता को पूर्णतया अवरुद्ध करके गंभीर बीमारियों को उत्पन्न करते हैं।

वर्तमान में इसी क्रम में मूत्रवहस्रोतस एवं मेदोवहस्रोत तथा शुक्रवहस्रोतस के मूल अंग किडनी-एड्रिनलिन ग्रंथी-मूत्रवाहिनियां-वृषण-शुक्र वाहिनियां-शुक्रवाहिनियों की गंभीर विकृतियाँ समाज में व्यापक एवं तीव्रता से फैल रही है। शुक्र या वीर्यविकार, मधुमेह एवं किडनी रोग इन्हीं उक्त तीनों स्रोतस या ओर्गन सिस्टम्स की मुख्य व्याधियों अनेक लक्षणों यथा शीघ्रपतन, स्वप्नदोष ,पेशाब में धातु आना , लिंग की कमजोरी - तनाव में कमी, मधुमेह, मधुमेह जन्य शारीरिक कमजोरी, विभिन्न मूत्रविकार के साथ-साथ क्रोनिक किडनी फेल्योर (CKD) जैसी जटिल युरिनरी ट्रेक्ट की समस्याओं के समूल निराकरण हेतु श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा द्वारा अतिदिव्य चमत्कारिक प्रभाव युक्त औषधि प्रमेहहारी २० प्रकार के प्रमेहों- शुक्र विकार- मधुमेह एवं वृक्क विकारों हेतु अनेक- अनेक बार प्रयोग करके लाभान्वित हुए रोगियों द्वारा प्रशंसित है। **यह विवाहित युवाओं के लिए अत्यंत लाभकारी है**

यह वेदलक्षणा प्रमेहहारी गोमूत्र अर्क-मिश्री-नींबू का सत्व - गोखरू- शतावरी - टेसू के पुष्प - अश्वगंधा जैसी दिव्य औष. धियां से निर्मित शास्त्र सम्मत योग है। वृक्क की अम्लीयता को समाप्त करके, क्षारीय गुणों युक्त करने में, गोमूत्र अर्क एवं नींबू का सत्व तत्काल प्रभावी है। गोखरू मूत्रल स्वभाव वाला है। शतावरी और टेसू के पुष्प किडनी की फाइब्रोसिसस को दूर करके पुन: सक्रिय करने का कार्य करते हैं। अश्वगंधा वृक्क के अंदर उपस्थित शरीर के लिए उपयोगी प्राकृतिक स्टेरॉयड्स एवं हार्मोन के निर्माण की क्रिया को संतुलित करता है।

इस प्रकार **19** प्रकार के प्रमेह और **20** वां मधुमेह नामक प्रमेह के साथ-साथ क्रॉनिक किडनी डिजीज, मूत्र मार्ग एवं प्रा. ेस्टेट संबंधित विकार की यह प्रथम पंक्ति की मानक एवं अनेक बार अनुभूत औषधि योग का निर्माण गोमाता की करुणा से संपन्न हुआ है। इसे अपने संबंधित व्याधियों से पीडित इष्ट जनों को अवश्य प्रेरित करें।

कुल पृष्ठ–36
मार्च 2026

प्रकाशन तिथी : 01 मार्च 2026
कामधेनु कल्याण 20 रुपए

RNI Reg- No - RAJHIN/2022/17167
Postal Reg No: RJ/SRO/9681/2025-2027

परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंदजी महाराजश्री के पावन सानिध्य में

अभिनव ब्रज मण्डल श्री मनोरमा गोलोकधाम में

नवनिर्मित गोआवास का उद्‌घाटन

एवं

निर्माणधीन विश्व के प्रथम गो–गोपाल कोरिडोर का अवलोकन

आदरणीय श्री रामनाथजी कोविंद

महामहिम पूर्व राष्ट्रपति भारत

द्वारा दिनांक 11 मार्च 2026 को 11 बजे किया जायेगा

आप सभी सादर आमंत्रित है।

महामहिम की उपस्थिति में न्यास की केंद्रीय कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह भी आयोजित होगा।

अभिनव ब्रज मण्डल श्री मनोरमा गोलोकधाम अर्बुदारण्य, रेवदर, सिरोही (राज.)